

वर्ष: 16 | अंक : 4 | अप्रैल 2025 | मूल्य: ₹ 10 /-

# हंसलोक संदेश



परमाराध्या माता श्री राजेश्वरी देवी जी  
आपकी जयंती 6 अप्रैल पर शत्-शत् नमन!

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका



## हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-4  
अप्रैल, 2025  
चैत्र-वैशाख, 2082 वि.स.  
प्रकाशन की तारीख  
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)  
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),  
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महारौली,  
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा  
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल  
एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020  
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:

कार्यालय: हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,

B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,

छतरपुर, नई दिल्ली-110074

संपर्क सूत्र-011-26652101/102

मो. नं. : 8800291788, 8800291288

Email: hansloksandesh@gmail.com

Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction

RNI No. DEL.HIN/2010/32010

## संपादकीय

### माँ ही इस सृष्टि का मूल

**सं** पूर्ण संसार की उत्पत्ति का मूल कारण शक्ति ही है जिसे ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों ने मिलकर मां दुर्गा के रूप में सृजित किया। इसलिए मां दुर्गा में ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों की शक्तियां समाई हुई हैं। जगत की उत्पत्ति, पालन और क्षय तीनों व्यवस्थाएं जिस शक्ति के अधीन संपादित होती हैं, वही हैं दुर्गा पराम्बा मां भगवती आदिशक्ति। मां ही आद्य शक्ति है। वही सर्वगुणों का आधार, राम, कृष्ण, गौतम, कणाद आदि ऋषि-मुनियों, वीर-वीरांगनाओं की जननी हैं। नारी इस सृष्टि और प्रकृति की जननी है। नारी के बिना तो सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जीवन के सकल भ्रम, भय, अज्ञान और अल्पता का भंजन और चिर स्थायी समाधान करने में समर्थ है। दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती स्त्री गुण हैं। मां वह अलौकिक शब्द है, जिसके स्मरण मात्र से रोम-रोम पुलकित हो उठता है। हृदय में भावनाओं का अनहद ज्वार स्वयं उमड़ता है और मनो मस्तिष्क स्मृतियों के अथाह समुद्र में डूब जाता है।

मां वह अमोघ मंत्र है, जिसके उच्चारण मात्र से हर पीड़ा का नाश हो जाता है। मां की ममता और उसके आंचल की महिमा का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है, उसे सिर्फ अनुभूत किया जा सकता है। आदिकाल से ही मनुष्य की प्रकृति शक्ति की साधना रही है। शक्ति साधना का प्रथम रूप मां ही मानी जाती है। हमारे देश में मां को शक्ति का रूप माना गया है और वेदों में मां को सर्वप्रथम पूजनीय कहा है। भारतीय दर्शन में सर्वोत्कृष्ट भाव जैसे- करुणा, वात्सल्य, माधुर्य, प्रेम, त्याग, निःस्वार्थ सेवा, बलिदान इत्यादि केवल एक शब्द में समाहित हैं, जिसे सभी आदर से मां कहते हैं। मां ही केवलमात्र इन भावों की गंगोत्तरी है। ये सर्वोच्च भाव उसी में पल्लवित, विकसित और प्रवाहित होते हैं। इसलिए मां वंदनीय है, पूजनीय है। माता ही आदिगुरु है, उसी की दया और अनुग्रह पर बच्चों का इहलौकिक और पारलौकिक जीवन निर्भर करता है। जगत जननी और संसार की अधिष्ठात्री देवी के ही विभिन्न रूपों का दर्शन नारी जाति के माध्यम से होता है। जब पराम्बा में मातृ-शक्ति का संचरण होता है, तो वह सृष्टि का सृजन एवं विस्तार कर अपने अनन्त जीवों को अपने शान्त और करुणामय वात्सल्य के आंचल से ढककर शान्त करती हैं। मां ही एक ऐसी व्यक्ति है जिसे कोई बदल नहीं सकता। मां जैसी भी हो, वह मां ही रहेगी। ऐसी ही महानतम विभूति थीं मातृस्वरूपा जगतजननी माताश्री राजेश्वरी देवी। हम उनकी जयंती 6 अप्रैल पर उनका पुनीत स्मरण कर उनके श्रीचरणों में बारम्बार नमन करते हैं। ■



# नारियों की प्रेरणा और आदर्श हैं माताश्री राजेश्वरी देवी

**मां** वंदनीय है, पूजनीय है। माता ही आदिगुरु है, उसी की दया और अनुग्रह पर बच्चों का इहलौकिक और पारलौकिक जीवन निर्भर करता है। जब एक व्यष्टिरूपा मां भी अपने बच्चों के लिए श्रेष्ठ मार्ग-प्रदर्शिका और ज्ञानगुरु होती है, तो आदि-शक्तिस्वरूपा देवी, जो समष्टिरूपिणी, जगन्माता है, वह अपने सभी बच्चों के लिए कल्याण-पथ प्रदर्शित करने वाली ज्ञानगुरु होती है; जगन्माता जगद्गुरु होती है। प्रकृति की अनन्त शक्ति मां में विराजमान है। मां ही एक ऐसी शक्ति है जिसे कोई भी बदल नहीं सकता। मां जैसी भी हो, वह मां ही रहेगी। मानव मात्र के लिए मातृ-शक्ति ही अमूल्य शक्ति है। मातृत्व ही हमारा गौरव है जिसे कोई छीन नहीं सकता है। मां शब्द में अतुल आनन्द है, प्रेम है, वात्सल्य है। मातृत्व वह शक्ति-स्रोत है जो सदैव अक्षय और अबाध रूप से बहता रहता है। वात्सल्य का वह अनन्त सागर है, प्रेम का अनन्त भण्डार है। मातृ-प्रेम, निःस्वार्थ, निष्कलुष और प्रतिदान की इच्छा से परे गंगा की धारा से अधिक शुद्ध है।

भारतीय संस्कृति आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत है। आध्यात्मिकता और त्याग भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। आज भी वे हमारे समाज की शक्ति और प्राण हैं। यहां के महापुरुषों को जन्म देने वाली आर्य माताएं ही हैं, जिन्होंने अपने आध्यात्मिक और विशुद्ध जीवन के अमिट संस्कार उनके हृदय पटल पर अंकित कर उनके जीवन को गहराई तक प्रभावित किया। अध्यात्म जगत में भारत में अनेक पतिव्रता, साध्वी, विदुषी एवं ब्रह्मवादिनी और मंत्रद्रष्टा आदर्श नारियां हो चुकी हैं।

इसी श्रृंखला में प्रातःस्मरणीय आदिशक्ति जगतजननी माताश्री राजेश्वरीदेवी नारी जाति का गौरव हैं जिन्होंने अपने जीवन काल में गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए देश-विदेश में वेद-शास्त्रों से प्रतिपादित ब्रह्मज्ञान का प्रचार किया और लाखों लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृतत्व की ओर तथा असत से सत की ओर अग्रसर किया। इनके जीवन में अदिति का तेज, अपाला का तप, दक्षिणा की दानशीलता, विश्ववारा की निष्पापता और वागाम्भृणी की वाक्पटुता और ओजस्विता, जूहू की निर्भीकता एवं निष्कपटता तथा अनसूया का सतीत्व था। हिमालय पुत्री माताश्री राजेश्वरी बाल्यकाल से

ही एक दिव्य कन्या थीं, सरल और स्वच्छ हृदय की बालिका। इनका प्रादुर्भाव 6 अप्रैल को देवभूमि उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल जनपद के अंतर्गत मेलगाँव में एक धर्मपरायण परिवार



**मातृ शक्ति दिवस 06 अप्रैल पर विशेष**

में हुआ। उस समय चैत्र नवरात्र के अनुष्ठान चल रहे थे। बाल्यकाल से दिव्यता के सर्वगुण बीज रूप से उनमें विद्यमान थे, जो धीरे-धीरे विकसित हो एक वटवृक्ष का रूप धारण कर गये। युवावस्था में उनका पाणिग्रहण श्री हंस जी महाराज के साथ हुआ। अदिति के समान श्रीमां ने अपने जीवनकाल में शब्द ब्रह्म एवं ब्रह्म-ज्योति का अनवरत न केवल प्रचार और प्रसार किया बल्कि श्रद्धावान जिज्ञासुओं को उसका व्यावहारिक बोध कराया, जैसे ऋषियों ने अपने जीवन काल में अपने शिष्यों को कराया था। वे ऐसी गुरुमाता थीं जो अदिति के समान पराविद्या, ब्रह्मविद्या की पूर्ण ज्ञाता एवं द्रष्टा थीं, जिन्होंने विदेश में भी अध्यात्म ज्ञान के प्रचार के द्वारा वैदिक संस्कृति और आर्य नारी की गौरव गरिमा को जाज्वल्यमान बना दिया। श्रीमां को विदेशों में करुणामयी मां, पवित्र मां “होली मदर” कहकर सम्बोधित किया गया।

माताश्री राजेश्वरी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व का यह प्रभाव था कि हजारों नर और नारी, साधु और साध्वियां बनकर तपश्चर्या का जीवन व्यतीत करते हुए अध्यात्म ज्ञान का प्रचार देश के कोने-कोने में कर रहे हैं एवं उनके लाखों शिष्य आत्मज्ञान की साधना के द्वारा अपने जीवन को प्रकाशमय और मंगलमय बना रहे हैं। वे ज्ञानदात्री थीं और अध्यात्म-ज्ञान के प्रसाद को सतत बांटती रहीं। माताश्री राजेश्वरी देवी कलिकाल में मातृशक्ति का आदि-स्रोत थीं। यद्यपि वह साधारण मां के रूप में ज्ञान प्रचार करती हुई विचरती रहीं, लेकिन वह साधारण मां सबकी मां थीं। आपकी, उसकी, मेरी मां- वे भगवती मां, सबकी मां थीं, सर्वव्यापी ही नहीं वे सर्वशक्तिमान भी थीं, लेकिन फिर भी साधारण जन भगवती मां को उस साधारण मां के माध्यम से ही पाते रहे हैं।

श्रीमां ने आदर्श गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए अपने पति एवं इष्ट श्री हंस जी महाराज के महान आदर्शों को सदैव अपने जीवन में अपनाया और उन्हीं के पदचिन्हों पर चलकर एक महान पतिव्रता नारी के आदर्श का पालन किया। अपने पति के प्रति अगाध श्रद्धा एवं समर्पण श्रीमां के हर स्वांस में मिलता था। उन्होंने सदैव निमित्त मात्र होकर अपने पति के आदर्शों और शिक्षाओं का पालन एवं प्रचार किया। श्रीमां एक महान पतिव्रता नारी थीं। माताश्री राजेश्वरी वागाम्भृणी के समान वाग्पटु थीं। उनकी ओजस्वी वाणी लाखों के जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर देती थी। श्रीमां अपने प्रवचनों में आधुनिक भारतीय नारी को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के लिए प्राचीन काल की अनेक आदर्श नारियों के उदाहरण दिया करती थीं और उनके पदचिन्हों पर चलकर सत्य, धर्म और मर्यादा का महत्व बताया करती थीं। श्रीमां कहती थीं कि आज भी भारत की नारी को उनकी गाथाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने बच्चों को वैसी ही शिक्षा देनी चाहिए, जैसे मदालसा आदि ने दी थी। श्रीमां ने इन्हीं वैदिक व पौराणिक काल की महान नारियों के समान अपने पुत्र-पौत्रों, परिजनों और सभी शिष्यों को सदैव धर्म और मर्यादा का पालन करने की शिक्षा दी। आत्मज्ञान को जानकर उसको जीवन में उतारने की शिक्षा दी।

श्रीमां के पास बहुत-सी स्त्रियां अपनी सांसारिक व्यथाओं और पीड़ाओं को लेकर आती थीं। कुछ स्त्रियां अपनी व्यथा को पत्रों में लिखकर मां तक पहुँचाती थीं-“हे मां! हम अभागिनी आपके पास तक नहीं आ सकती हैं, आप तो शक्ति हैं! आप हम पर दया करके हमें दर्शन दें, आप हमारे पति को सद्बुद्धि दें, आप हमारे बेटे को समझायें।” संसार तो दुःखों का घर है फिर

भी श्रीमां समझाती थीं-“अरे! धैर्य कभी नहीं छोड़ना चाहिए, क्या मेरे पर कम विपत्ति आयी? क्या सीता और द्रौपदी पर कम कष्ट आये? तुम्हारे तो अपने पति ही रावण जैसा व्यवहार कर रहे हैं। तुम अपने घर में तो हो, सीता को रावण उठाकर ले गया और उसे पराई जगह अशोक वाटिका में रहना पड़ा था। मुझे ही देखो कितने प्रकार की बातें, कटाक्ष और कष्ट सहने पड़ते हैं। तो क्या धर्म के मार्ग को, सच्चाई के मार्ग को, इन कष्टों से तंग आकर छोड़ देना चाहिए? सोना अग्नि में तपकर ही निखरता है, ऐसे ही नारी भी तप, त्याग और धैर्य से ही दूसरों के हृदय को बदल देती है।” माताश्री राजेश्वरी की शिक्षाएं नारियों के लिए आह्वान हैं, आदर्श हैं, प्रकाश स्तम्भ हैं। नारी शक्ति का आह्वान करते हुए श्रीमां ने एक बार प्रवचन में कहा-“हे भारत की माताओ! तुम वही पार्वती हो, तुम वही जानकी हो, तुम चाहो तो क्या नहीं बन सकतीं, तुम्हारे अन्दर वह ताकत है, पर तुम अपनी ताकत को भूल गयी हो। इसलिए मैं कहती हूँ कि अध्यात्म ज्ञान को जानकर अपनी वास्तविक शक्ति को पहचानो। नारी की शोभा मातृत्व से ही है। यदि नारी जननी के स्वाभाविक कर्तव्य कर्म का पालन नहीं करती, तो वह समाज में स्वीकृत नहीं होती। तभी मैं कहती हूँ कि हर नारी में निहित मातृ शक्ति को विकसित करने से ही स्वच्छ समाज की स्थापना और नैतिकता एवं मर्यादा का पोषण हो सकता है।

श्रीमां कहती थीं- “जो हर समय, हर प्रकार से अपने परिवार को उज्ज्वल बनाकर अपने सारे सुखों को त्याग कर परिवार के सदस्यों को सुखी रखती है, उसे आदर्श नारी कहते हैं।” मानव की भलाई के लिए, मानव पवित्रता के लिए, मानव को मर्यादा में रखने के लिए यदि नारी त्याग नहीं करेगी, तो नारी महान कहां बनेगी? भारत की नारियों का त्याग विश्व की नारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। श्रीमां का जीवन, त्याग और तप की एक ऐसी गाथा है, जिसे भक्त लोग युग-युगों तक गाते रहेंगे। श्रीमां ने सदैव अपना जीवन, परहित और परोपकार में लगाया, अपने जीवनकाल में अनेक आश्रम, गौशालाएं, स्कूल और औषधालय जनसेवा के लिए बनाये। हजारों लोग इन आश्रमों में आकर प्राचीन ऋषियों के आश्रम की तरह अध्यात्म की शिक्षा एवं दीक्षा लेते हैं, ले रहे हैं और आदर्श जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आज श्रीमाता जी के अधूरे कार्यों को उनके सुपुत्र श्री भोले जी महाराज अपनी अर्धांगिनी माताश्री मंगला जी के साथ मिलकर बखूबी आगे बढ़ा रहे हैं। ऐसी महानतम विभूति जगतजननी माताश्री राजेश्वरी देवी को उनके अवतरण दिवस पर कोटि-कोटि नमन! ■



# लेने को हरिनाम है, देने को अन्न दान

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

**प्रे**मी सज्जनों! राजा परीक्षित को जब शुकदेव मुनि ज्ञान देने के लिए पहुंचे, तो वहां उपस्थित सब लोग उठकर खड़े हो गए और हाथ जोड़कर शुकदेव मुनि का अभिवादन किया। शुकदेव मुनि व्यास गद्दी पर जाकर बैठ गए। राजा परीक्षित ने व्यास जी से पूछा कि छोटे से बालक के लिए आप सब लोग उठकर खड़े हो गए, शुकदेव जी के अंदर ऐसी क्या बात है? व्यास जी ने कहा-राजन, शुकदेव ज्ञान में सबसे बड़े हैं और वे ज्ञान का स्वरूप हैं। इसलिए हम सब लोग ज्ञानी का सम्मान करने के लिए उठे। मैं शुकदेव का पिता हूँ और सामने जो ऋषि बैठे हुए हैं, ये मेरे पिता हैं और शुकदेव के दादा हैं, लेकिन वे भी ज्ञान का आदर करने के लिए अपने स्थान से उठे। आज समय

**मन का मणका फेर।।** कहाँ है मन का मणका? और अगर यह दोहा पढ़ने के काबिल नहीं है, तो

तो केवल अनन्य भक्ति से होता है। हे दुनियाँ के लोगो! मैं आपसे पूछता हूँ कि अनन्य भक्ति क्या है, बतावे कोई? पिछली बार प्रयागराज में जो कुम्भ हुआ था, उसमें मैं शामिल होने के लिए गया था। श्री के.एम. मुन्शी जो उस समय यू.पी. के गवर्नर थे, मैंने उनसे मुलाकात की और कहा कि यहां पर अनेक धर्माचार्य, महामण्डलेश्वर और जगद्गुरु शंकराचार्य आदि आये हुए हैं। आप उन सबको एक स्थान पर बुलवाओ और उनसे पूछो कि सत्य क्या है? सत् और असत् का निर्णय कराओ। गवर्नर साहब कुछ नहीं बोले। मैंने कहा कि इनको सत्य का ज्ञान नहीं है। जो सत्य को जान जाता है, सत्यनाम का सुमिरण करता है, तो उसको किसी से भय नहीं लगता। संतों ने कहा



कितना बदल गया कि लोग ज्ञान को तो जानना चाहते हैं, लेकिन ज्ञानी और संतों का सम्मान नहीं करना चाहते। जब तक हमारे अंदर संतों के प्रति सम्मान का भाव नहीं होगा, श्रद्धा और प्रेम नहीं होगा, तो हृदय में ज्ञान कैसे उपजेगा!

आप सब पढ़े-लिखे लोग हैं, गांव-गांव में बड़े-बड़े स्कूल और कालेज खुले हुए हैं। आप लोग एक दोहे का ही अर्थ बताओ-

**माला फेरत युग गया,**

**पाया न मन का फेर।**

**कर का मणका डार दे,**

क्यों पढ़ाते हो, क्यों लड़कों के ऊपर बोझ लादते हो? तुम बड़े-बड़े प्रोफेसर हो, लेकिन एक दोहे का, एक श्लोक का और एक लाइन का अर्थ नहीं बता सकते? वहाँ तो तुम बताओगे कि हाथ की माला डाल दो और मन की माला फेरो, लेकिन जब मालूम होगा, तभी तो मन की माला फेरोगे?

श्रीमद्भगवत् गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाते हुए कहा कि हे अर्जुन! वेद पढ़ने से, यज्ञ करने से, दान करने से, तीर्थों में घूमने से मेरा तत्त्वज्ञान नहीं होता। मेरा तत्त्वज्ञान

है-

**काल पकड़ चेला किया,**

**भय के कतरे कान।**

**हम सतनाम सुमिरण करें,**

**तो किसको करें सलाम।।**

जो लोग सत्य नाम का सुमिरण करते हैं, वे काल को चेला बनाकर भय के कान कतर देते हैं। लेकिन सत्य नाम है क्या, हमें इस बात को समझना चाहिए। मैं मुम्बई गया और वहां पर सत्संग किये। तीन-चार बार के.एम. मुन्शी हमारे सत्संग में आये और मैंने भी उन्हें खूब सुनाया। जब वे यू.पी. के

गवर्नर थे, तो मैंने कहा था कि कुम्भ में सबको इकट्ठा करो, यहां पर सब आये हुए हैं। अपने यहाँ चाय पर बुला लो और सत्य का निर्णय करा लो, लेकिन तब नहीं कराया। अरे, तुम तंत्र-मंत्र को सच्चा समझते हो, लेकिन ये तंत्र-मंत्र सब झूठे हैं। संतों ने कहा-

**तंत्र-मंत्र सब झूठ हैं,**

**मत भरमो संसार।**

**सार शब्द जाने बिना,**

**कोई न उतरसी पार।।**

मैं पूछता हूँ कि जब तुम मन्त्र जपते हो, तो तुम्हारा मन कहाँ टिकता है? तुम मन्त्र जपते हो और तुम्हारा मन दसों दिशाओं में फिरता है, तो ऐसे नाम-सुमिरण का क्या लाभ हुआ? भगवान श्री राम अयोध्यावासियों को हाथ जोड़कर कहते हैं-

**औरउ एक गुपुत मत,**

**सबहिं कहउँ कर जोरि ।।**

**संकर भजन बिना नर,**

**भगति न पावइ मोरि ।।**

आप सभी को एक गुप्त मत बताता हूँ कि भगवान शंकर के भजन के बिना कोई भी मनुष्य मेरी भक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। शंकर भजन क्या है? हमें इसे समझना होगा। एक लोटा जल और बेलपत्र शिवजी के ऊपर डाल देना या ओम् नमः शिवाय कहना, क्या यही शंकर भजन है? यह शंकर भजन नहीं है। महामन्त्र उसको कहते हैं, जिसका न शुरू हो, न अन्त हो और जिसका जाप स्वयं शिवजी करते हैं। उसको नानक साहब कहते हैं-

**आदि सच जुगादि सच।**

**है भी सच, नानक होसि भी सच।।**

जो तीनों कालों में सत्य हो, उसको कहते हैं- सत्य। देखो, महात्मा गांधी और पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे महान नेता आज हमारे बीच नहीं हैं? लेकिन

एक समय था, जब वे हमारे साथ थे। तो उसको न सत् कहते हैं, न असत् कह सकते हैं, क्योंकि यह परिवर्तनशील है। इसी तरह यह सारी सृष्टि परिवर्तनशील है।

एक गीदड़ नदी में डूब रहा था, तो उसने कहा कि सारी दुनियाँ डूबी, सारी दुनियाँ डूबी। जब देखने वाले ने उससे पूछा कि डूब तो केवल तू रहा है, दुनियाँ कहाँ डूब रही है? तो उसने कहा कि मैं डूब गया, तो मेरे लिए तो सारी दुनियाँ

**भगवान राम कि शंकर भजन के बिना मेरी भक्ति नहीं मिल सकती और शंकर भजन उस महामन्त्र को कहते हैं कि जिसका न शुरू हो, न अन्त हो और जिसका जाप स्वयं शिवजी करते हैं।**

ही डूब गई। तो कहते हैं भगवान राम कि शंकर भजन के बिना मेरी भक्ति नहीं मिल सकती और शंकर भजन उस महामन्त्र को कहते हैं कि जिसका न शुरू हो, न अन्त हो और जिसका जाप स्वयं शिवजी करते हैं। शिवजी माला नहीं फेरते हैं, तुमने उनकी तस्वीर देखी होगी। वह चुपचाप खेचरी मुद्रा लगाकर भजन करते हैं और उस भजन में तालू भी नहीं हिलेगा। गुरु नानक देव जी कहते हैं- भगवान के सच्चे नाम का सुमिरण उठते, बैठते, सोते और जागते हर समय हो सकता है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि जो अंत समय में शरीर छोड़ते हुए मेरा सुमिरण करता है, वह निश्चित रूप से मेरे को मिलता है, इसमें जरा-सा भी संदेह नहीं करना चाहिए। लोग समझ लेते हैं कि पहले तो दुनियाँ को खूब भोग लो, फिर मरते

समय भगवान का सुमिरण कर लेंगे और भगवान को मिल जायेंगे। लेकिन जब आखिरी समय में भगवान मिलते हैं, तो क्या जीवन काल में नहीं मिल सकते? अरे! भगवान तो सुमिरण करने से ही मिलेंगे। जब सुमिरण हम आज करेंगे, तो क्या भगवान आज नहीं मिलेंगे? भगवान श्रीकृष्ण ने फिर बताया कि जो कार्य हमने जीवन भर किया, जो बात जीवन भर अधिक याद रहती है, वही बात मरण काल में भी याद आती है।

अन्त समय में वही बात याद आयेगी, जिसे हमने जीवन भर याद किया होगा। जब अभी तक तुमने जाना नहीं कि भगवान के नाम सुमिरण का मार्ग क्या है, अभी तक रास्ता ही नहीं देखा, तो आखिर कहाँ जाओगे?

एक दिन सुबह मैं गाजियाबाद से आ रहा था। गाजियाबाद के पास एक नदी है। उसमें मैंने देखा एक आदमी डूब रहा था। वह नीचे जाता था और ऊपर आ जाता था। बताओ उस समय में भगवान के नाम का सुमिरण कैसे करोगे? माला वहाँ नहीं फेर सकोगे, मन्दिर में नहीं जा सकोगे और मान लो पलंग में भी लेटे हुए हो, तो भी अन्तिम समय में तुम्हारे हाथ अकड़ जायेंगे, माला नहीं फेर पाओगे। जुबान नहीं हिल सकेगी, मुँह भी अकड़ जायेगा। अगर मुँह खुला है, तो खुला ही रह जायेगा। एक भी शब्द बोल नहीं सकोगे। आँखों में बदलाव आ जायेगा, देख भी नहीं सकोगे, तो उस समय तंत्र-मंत्र का उच्चारण नहीं कर सकते। इसलिए इधर-उधर न भटक कर सद्गुरु महाराज से भगवान के सच्चे नाम को जानकर भजन करना चाहिए।

इसी तरह से आजकल के ये जो ब्रह्मज्ञानी हैं, वे भगवान को भूले हुए हैं, उनके लिए यह स्वप्न है। जब उनकी

मौत होगी, तो फिर पहले की तरह वैसे ही चौरासी में चक्कर लगाते रहेंगे। कभी गधा बनेंगे, कभी कुत्ता बनेंगे और कभी घोड़ा बनेंगे, क्योंकि फिर इन्हें कोई भी चौरासी से नहीं छुड़ा सकता, केवल एक प्रभु की भक्ति है, जो इन्हें चौरासी से छुड़ा सकती है। तो ऐसी है प्रभु की भक्ति, जिसकी महिमा स्वयं भगवान ने गायी। भक्ति जो है, वह स्वतन्त्र है। वेद पढ़ने की, यज्ञ करने की या दान-पुण्य आदि करने की, कोई विद्या पढ़ने की जरूरत नहीं है। भक्ति हर एक आदमी कर सकता है, प्रभु के नाम का सुमिरण हर कोई कर सकता है। कहा है-

लेने को हरि नाम है,

देने को अन्नदान।

तरने को आधीनता,

डूबन को अभिमान।

मनुष्य को कभी अभिमान नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह उसको डुबा देता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि अभिमान को छोड़ो। तुमको अभिमान है कि हम तो बहुत बड़े मिनिस्टर हैं, या प्रेसीडेंट हैं या बड़े भारी सेठ हैं, हमारी इतनी मिलें चलती हैं, हम इतने बड़े राजा हैं, यह सब झूठा मान-गुमान है। एक ही इलेक्शन में यदि हार जायें, तो मिनिस्ट्री रखी रह जाती है। जीते-जी मिनिस्टर बनने से रह जाते हैं और मरने के बाद तो भाई, कोई भी मिनिस्टर नहीं रहेगा। तो जीते-जी उलझनों में उलझे हुये हो। ज्ञान के बारे में किसी से पूछने में शर्म आती है। पर मैं पूछता हूँ, जब किसी अनजान जगह में तुम पहुँच जाते हो, जहाँ चार-पाँच रास्ते होते हैं, वहाँ अगर कोई झाड़ू लगा रहा होता है, तो उससे भी पूछ लेते हो कि तुम्हें किधर जाना है? लेकिन भगवान की

भक्ति का रास्ता तुम नहीं पूछोगे। भक्ति के लिए तुम्हें फुर्सत नहीं है। जो सत्य था, वह फुर्र हो गया, उड़ गया। अब तो झूठ ही झूठ फैला हुआ है। रिश्ततखोरी का जमाना है। बिना वजह किसी पर मुकद्मा कर देने का जमाना है। बड़े-बड़े होटलों में, सिनेमाघरों में लाइनें लगी हैं, क्योंकि सब कुछ यहीं दिखाई देता है। इसके अलावा दुनिया में कुछ नजर ही नहीं आता। माया की चमक-दमक में मनुष्य अपने लक्ष्य को भूलता जा रहा

जो कार्य हमने जीवन भर किया,  
जो बात जीवन भर अधिक याद रहती  
है, वही बात मरण काल में भी याद  
आती है। अन्त समय में वही बात याद  
आयेगी, जिसे हमने जीवन भर याद  
किया होगा।

है। सुदामा जिस महल को देखकर रोये थे कि यह माया है, यह मैंने कब मांगी थी भगवान से। यह तो बड़ी ठगिनी है, यह सबको खा जाती है, इसको कोई नहीं भोग पाता। तब सुदामा की पत्नी ने कहा कि मेरी इच्छा थी, मैं गरीबी से बहुत दुःखी थी। इसलिए भगवान ने अन्दर की आवाज सुनकर ये धन-दौलत और महल-खजाने मुझे दिये हैं। इसी माया-मोह के जाल में सारी दुनियां फँसी पड़ी है। जो चीजें नाश हो जायेंगी, कुटुम्ब कबीला छूट जायगा, केवल एक प्रभु का नाम ही सच्चा साथी है। मगर उसे तुम पूछते नहीं। बाकी, यह सब स्वप्नवत् है भाई! एक सज्जन मेरे पास आये, कहने लगे-थोड़े दिन हुए मेरी स्त्री मर गई, मुझे उसकी बहुत याद आती है। मैं तुम्हें एक सच्ची बात बताता हूँ। रात मुझे स्वप्न हुआ और सवेरे के टाइम

हुआ। बहुत अच्छा स्वप्न था कि कहीं सत्संग हो रहा है, लोग मेरे से कह रहे हैं कि वहाँ चलो! मैंने उनसे कहा कि मेरे पास टाइम नहीं है, स्वप्न तो बड़ा अच्छा था, लेकिन था तो स्वप्न ही न? तो ऐसे ही यह सब स्वप्न है भाई! मैंने उनको समझाया। एक और सज्जन रात को मेरे पास आये। कहने लगे कि मेरा मन नहीं रुकता। तो मैंने कहा कि भगवान का नाम तुम्हारे पास है, उसका सुमिरण और अभ्यास तुमको करना है।

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट रूप दिखलाया और कहा कि मैंने ही सब कुछ बनाया है, मैं ही सबमें हूँ और सब मेरे में हैं। भगवान श्रीकृष्ण भी कहते हैं- हे अर्जुन, अभ्यास करो, तो अगर हम तुमको कहते हैं कि अभ्यास करो, तो हम कौन-सी गलत बात कहते हैं। अर्जुन ने भगवान से कहा कि भगवान्, जैसे आकाश के टुकड़े करना और हवा की गठरी बांधना कठिन है, ऐसे ही मन को एकाग्र करना बड़ा कठिन है। तब भगवान ने कहा कि बेशक, जो तुम कहते हो ठीक है, मन को एकाग्र करना बड़ा कठिन है, पर अभ्यास और वैराग्य से मन काबू में होता है। तो चलते-फिरते, सोते-जागते और उठते-बैठते नाम सुमिरण का अभ्यास करो। संतों ने कहा है-

दिल में झाड़ू लगाओ। अगर तुम्हारे अंदर कहीं मैल जमा हुआ है, तो उस मैल को निकालो। एक तो पहले से ही कचड़ा तुम्हारे अंदर जमा है, उस पर और भी कचड़ा डालते रहोगे, तो कचड़ा खाना यानि कूड़ाघर बन जायेगा। वह सड़ेगा, उसमें से बदबू आने लगेगी। जहाँ सफाई होती रहती है, वहाँ बदबू नहीं आती। इसलिए प्रभु का सुमिरण करो।



# अपनी स्वांसी की कीमत को समझो

श्री भोले जी महाराज

**प्रे**मी सज्जनों! अभी हम कई क्षेत्रों से सत्संग करते हुये आ रहे हैं। वहां पर महात्मागण ने सत्संग प्रोग्राम रखे थे। सभी जगह बहुत अधिक संख्या में भक्त सत्संग में आये। हमें कुछ लोग मिले और कहने लगे कि हम विदेश में धन कमाने जाते हैं। पर धन कमाने के बाद भी हमारे हृदय में शांति नहीं है, हम शांति को खोज रहे हैं। हमने सब कुछ कर तो लिया है, पर हृदय में शांति कैसे मिलेगी, यह हमको अभी तक समझ में नहीं आया? वे लोग कहते हैं कि हमने बाहरी पूजा-पाठ करके भी देख ली। हमने कण्ठी-माला जपकर भी देख ली। मुंह से भी राम-राम जपते हैं, पर हमारा मन एक जगह नहीं टिकता है। मन चंचल है, वह वहां से भाग जाता है। वे कहते हैं कि महाराज! हमें बताइये कि हम आत्मज्ञान को कैसे अपने हृदय में धारण करें, कैसे हम ज्ञान को जान सकते हैं?

जैसे एक गोताखोर पानी में गोता लगाता है, यदि पानी में उसका ध्यान बंट जाये, तो वह अपने लक्ष्य को भूल जायेगा। जैसे एक बन्दूक चलाने वाला है, यदि उसका ध्यान टारगेट (ध्येय) से हट जायेगा, तो निशाना कहीं-का-कहीं लग जायेगा। बन्दूक चलाने वाला अपना निशाना लगाने के लिये टारगेट को देखता है, बाकी उसे कुछ नहीं दिखाई देता। इसी प्रकार हमारा चंचल मन भटकता रहता है, हमें भी अपना ध्यान का निशाना ध्येय रूपी परमात्मा पर लगाना है ताकि मन हमारे काबू में हो सके। मन काबू में कैसे होगा? जब हम ज्योति स्वरूप परमपिता परमात्मा का ध्यान करेंगे। ध्यान करके ही हम



चंचल मन को काबू में कर सकते हैं। ज्ञान सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि बताई है, क्योंकि बिना ज्ञान के मनुष्य पशु के समान है। भगवान कहते हैं कि मैंने तो तुम्हें मानुष जन्म दिया। हम इतनी बेशकीमती चीज के महत्व को समझ नहीं रहे बल्कि हमने इस मानव तन को सांसारिक भोगों में ही गंवा रहे हैं।

एक राजा था। जंगल में भ्रमण करते हुए एक दिन वह रास्ता भटक गया। अंधेरे में उसे एक झोपड़ी मिली, जिसमें एक लकड़हारा रहता था। उस बेचारे ने विनय भाव से कहा कि महाराज! आज रात को आप यहां पर ठहर जाइये, राजा वहां ठहर गया। राजा लकड़हारे के आव-भाव से बड़ा खुश हुआ। राजा ने एक बेशकीमती चंदन का जंगल उपहार रूप में लकड़हारे को दे दिया ताकि उसकी गरीबी दूर हो जाए। राजा ने कहा कि तुम कुछ दिनों बाद मेरे घर मिलने के लिए आना। लकड़हारा अज्ञानतावश उस जंगल की लकड़ियों को पहले की तरह कोयला बनाकर बाजार में बेचता गया। कुछ

दिन बाद राजा ने उसे बुलाया और पूछा- भाई, तुम्हारे क्या हालचाल हैं? उसने कहा-महाराज! मैं तो गरीब का गरीब हूं। उसने कहा- आपने मुझे बेशकीमती लकड़ी का जंगल भी दिया, पर उससे मेरे को कुछ फायदा नहीं हुआ। तब राजा ने उससे पूछा कि तुम क्या करते हो? उसने कहा- महाराज! मैं उसकी लकड़ियों को जलाकर कोयला बनाकर उसे बाजार में बेचता हूं। राजा ने कहा कि अरे बेवकूफ! तुम उसका कोयला मत बनाओ। उसकी लकड़ी को तुम बाजार में बेचकर आओ। जब बाजार में चंदन की लकड़ी के बहुत दाम लगने लगे, तब उसे समझ में आया कि नासमझी के कारण मैंने अपना कितना नुकसान किया।

इसी प्रकार भगवान की दया से हमें स्वांसी का बेशकीमती चंदन का जंगल मिला है। हमने इसको विषय-भोगों में नष्ट नहीं करना चाहिए बल्कि सद्गुरु महाराज से भगवान के सच्चे नाम को जानकर भजन-सुमिरण करना चाहिए। तभी हमारा मनुष्य जन्म सफल होगा।

# मनुष्यों की सुषुप्त चेतना को जगाना ही महापुरुषों का काम

माताश्री राजेश्वरी देवी

**प्रे**मी सज्जनों! जब बच्चे के शरीर पर भयंकर फोड़ा बन जाता है, तो माँ अपने हृदय पर पत्थर रखकर डॉक्टर के पास जाती है और कहती है कि मेरे बच्चे को यह भयंकर फोड़ा है, बच्चा सोता नहीं है, इसके अन्दर मवाद भर चुकी है, डॉक्टर साहब आप इसको देखिए। डॉक्टर बच्चे को देखता है और उसके फोड़े में चीरा लगा देता है। माँ अपने बेटे के हित के लिए, उसका फोड़ा साफ करने के लिए डॉक्टर से चीरा लगवा देती है। आज का मनुष्य भी बहुत तरह की मानसिक बीमारियों से ग्रसित है। सारी भौतिक सुविधाएं होने पर भी मनुष्य का मन अशांत है, क्योंकि उसने जीवन में अध्यात्म ज्ञान को नहीं जाना।

मनुष्य को ज्ञान देने के लिए समय-समय पर महान् शक्तियाँ संसार में आती हैं। उनका काम होता है मनुष्य को जगाना, मनुष्य की चेतना को जाग्रत करना। मनुष्य को जगाने के अलावा उनका कोई दूसरा मतलब या उद्देश्य नहीं होता। वे अध्यात्म ज्ञान देकर मनुष्य के अंदर आंतरिक बदलाव लाती हैं।

भक्त समाज में कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो गुरु महाराज की आज्ञा का पालन नहीं करते और अपने मन के मुताबिक आशीर्वाद पाना चाहते हैं। वे कहते हैं कि महाराज जी, मैं यह काम करना चाहता हूँ, तो गुरु महाराज कहते हैं कि अच्छा भाई! कर ले, तेरी इच्छा। गुरु महाराज जी की इच्छा नहीं है, पर उन लोगों की इच्छा के मुताबिक मना कैसे करते, उनको हाँ करनी पड़ती है। इसी तरह से लोगों ने संत-महापुरुषों को कभी भी सुखी जीवन बिताने नहीं दिया और आज उनकी मूर्ति की पूजा करके उनको खुश करना चाहते हैं, उन्हें रिझाना चाहते हैं। जब उनके

अन्दर चेतन शक्ति थी, तब तो तुमने नुक्ताचीनी की। कोई उन्हें राजनीतिक क्षेत्र में लाना चाहता था, तो कोई दूसरे क्षेत्र में। महान शक्तियाँ मनुष्य के झूठ, धोखा, छल-कपट और चालाकी को पसंद नहीं करतीं और इन सब चीजों से घृणा करके फिर अपने चोले को बदल देती हैं। जब मनुष्य धोखा देने लग जाता है, भक्त धोखेबाज बन जाता है, तो महापुरुषों को अपना चोला बदलता पड़ता है।

भगवान बुद्ध का इतिहास आप लोगों ने पढ़ा होगा। एक समय में बौद्ध धर्म का बहुत प्रचार हो गया। वह बहुत सारे देशों में फैल चुका था और जब वह बहुत ज्यादा फैला, तो वहाँ गन्दगी भी होने लगी। बौद्ध धर्म में कुछ ऐसे स्वार्थी लोग घुस गये, जो अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते थे। उन्होंने भगवान बुद्ध को इतना गन्दा भोजन कराया जिससे बुद्ध को खुद बहुत ग्लानि हुई और उन्हें उस शरीर को छोड़ना पड़ा। बुद्ध के इतिहास को, उनकी जीवनी को देखो। राजा का बेटा हो करके भगवान बन गया। क्यों बने भगवान? क्या नहीं था उनके राज्य में? पत्नी थी, पुत्र था और सारा सुख-वैभव उनके घर में। राजा को तो भगवान का स्वरूप बताया है। उनके घर में क्या कमी थी? केवल उनको परमात्मा के नाम का बोध नहीं था। भगवान के उस नाम की तलाश के लिए बुद्ध ने बड़े-बड़े तप किये, दूर-दूर तक भ्रमण किया। रामचरित मानस में संत तुलसीदास जी कहते हैं-



**जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू।  
सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू॥**

जिसको जिस पर सत्य स्नेह होता है और जिस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए वह निकलता है, वह उद्देश्य अवश्य पूरा होता है। बुद्ध का वह उद्देश्य पूरा हुआ, लेकिन जब उन्हें गन्दा भोजन कराया गया, तो बुद्ध को भी शरीर त्यागना पड़ा। इसलिए संत-महापुरुष जो ज्ञान देते हैं, हमें केवल उनके ज्ञान से सम्बन्ध रखना चाहिए। ज्ञान से तुम बहुत ऊँचे उठ सकते हो। गुरु नानकदेव जी कहते हैं-

**जिन मानुष से देवता कियो,**

**करत न लागी बार।**

गुरु महाराज जी की इतनी बड़ी महिमा है, इतनी बड़ी कृपा है कि उन्होंने मनुष्य से देवता बना दिया। देख लीजिये, ये हमारे साधु-संन्यासी हैं। वास्तव में ये नेम-धर्म से रहते हैं, ज्ञान का प्रचार करते हैं। गुरु महाराज जी ने इन्हें प्रचार की आज्ञा दे रखी है। आप देखिये, जहाँ

ये ज्ञान देते हैं, जीवन-पर्यन्त इन्हीं की पूजा होती है। इन्हीं की आज्ञा में वे लोग चलते हैं। हमारी पूजा वहाँ तभी होती है, जब कभी हम वहाँ जाते हैं। बाकी पूजा ऐसे मनुष्यों की होती है, जो देवता के समान होते हैं। जो लोग चरित्र से गिर जाते हैं, वे महापुरुषों की कृपा को नहीं समझते, अपने ध्येय को नहीं समझते। हम पहले कैसे थे और संत-महापुरुषों ने हमें कितना महान बना दिया, जो लोग इस बात को नहीं समझते, ऐसे लोगों का पतन हो जाता है।

आप लोग तो काफी पुराने सत्संगी हो। बहुत दिनों से इस मिशन का सत्संग सुन रहे हो। इस मिशन का केवल उद्देश्य है परमात्मा के सच्चे नाम को जनाना और समाज सेवा। इसके अलावा इस मिशन का दूसरा कोई भी उद्देश्य नहीं है। क्या है समाज सेवा, जैसे स्कूल खोलना, अस्पताल खोलना आदि। समाज जो हमसे चाहता है, वैसा हम करते हैं। मिशन के अन्दर भाई और बहन भी साधु हैं। मिशन में पति और पत्नी भी साधु हैं। इस मिशन में बेटा और पिता भी साधु हैं और माता भी बाई बनी हुई है। इस तरह से इस मिशन में भगवान के ज्ञान को जानने के लिए जोर दिया जाता है। ज्ञान को जनाने के लिए देश भर में जगह-जगह सत्संग होते हैं, जो मनुष्य इस ज्ञान को जानना चाहता है, वह उसको जनाया जाता है। यह ज्ञान जबर्दस्ती का विषय नहीं है, यदि यह जबर्दस्ती का विषय होता, तो भगवान श्रीकृष्ण अट्ठारह अक्षौहिणी सेना के बीच में उस ज्ञान को अर्जुन को ही अकेले क्यों देते? वे यह ज्ञान सबको दे देते और सभी बच जाते। ज्ञान को पाने के बाद महाभारत की लड़ाई भी नहीं होती। देखो, वहाँ कौन-कौन आये थे लड़ने के लिए? द्रोणाचार्य जैसे गुरु, अश्वत्थामा जैसे योद्धा, भीष्म पितामह जैसे महाबली।

मतलब कि बड़े-बड़े बलशाली योद्धा वहाँ आये हुए थे। क्यों आये हुए थे? लड़ाई के लिए और मरने के लिए। उनका एकमात्र उद्देश्य था लड़ना। दुर्योधन हस्तिनापुर का राज्य चाहता था, उसकी आज्ञा मानकर बड़े-बड़े योद्धा पांडवों से लड़ने के लिए आये थे। महाभारत के युद्ध में केवल अर्जुन एकमात्र ऐसा वीर था, जो लड़ाई नहीं चाहता था। अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण से कहने लगा कि नहीं, नहीं मैं सबका

मनुष्य को ज्ञान देने के लिए समय-समय पर महान् शक्तियाँ संसार में आती हैं। उनका काम होता है मनुष्य को जगाना, मनुष्य की चेतना को जाग्रत करना। मनुष्य को जगाने के अलावा उनका कोई दूसरा मतलब या उद्देश्य नहीं होता।

हित चाहता हूँ, मैं किसी को मारना नहीं चाहता। दोनों ओर अपना ही परिवार है, लड़ाई में यह नष्ट हो जायेगा और मेरे माथे पर कलंक लग जायेगा। मैं भीख माँग करके खा लूँगा, पर लड़ाई नहीं करूँगा। मैं इस तरह के राज्य को नहीं चाहता हूँ। अर्जुन के अंदर शक्ति थी, लेकिन युद्ध के मैदान में अपने बंधु-बांधवों को देखकर वह बेचैन हो गया, मोहग्रस्त हो गया। अर्जुन कहता है कि मैं लड़ना नहीं चाहता हूँ। तब भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सत्संग सुनाया और उसे आत्मतत्त्व का बोध कराया, आत्मज्ञान दिया। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि देख, मैं तेरे द्वारा सब कुछ करवा रहा हूँ, तू तो केवल निमित्त मात्र है। ये दुष्ट वास्तव में अपना हित नहीं समझते हैं, ये केवल मरने के लिए ही आये हुए हैं। ये दुष्ट पापी का साथ दे रहे हैं। जब ये मरना ही चाहते हैं, तब इनको मारने में कोई अधर्म नहीं है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सत्संग सुनाकर आत्मज्ञान दिया और फिर वही

अर्जुन युद्ध के लिए तैयार हो गया।

मेरे कहने का मतलब है कि बड़े-बड़े संत-महापुरुषों, राजाओं तथा योद्धाओं से भारत भूमि का इतिहास भरा पड़ा है। यहाँ पर महाराजा हरिश्चन्द्र जैसे दानी हुए, जिसने दक्षिणा देने के लिए स्त्री को भी बेच दिया, अपने पुत्र को भी दक्षिणा के लिए बेच दिया तथा अपने आपको भी बेच दिया। श्मशान घाट पर सर्वस्व लुटा करके दक्षिणा के ऋण को चुकता करा रहा है। ऐसे-ऐसे महादानी हुए इस भारतभूमि में और आज इस भारतभूमि की क्या दशा हो रही है, देख लीजिये। चारों ओर हाय-हाय हो रही है, न जाने इस हाय-हाय से क्या होगा? यह भी तुम समझते हो, जिस घर में सन्तोष नहीं होता है, जिस देश में सन्तोष नहीं होता है, तो वहाँ भी भयंकर विपदा आ सकती है। जिनका

विश्वास हट जाता है, जिनके अंदर स्वार्थ आ जाता है, जो धोखेबाज बन जाते हैं, वहाँ भी भयंकर आफत आ जाती है। तो इस तरह से यह हाय-हाय क्या करेगी? यह एक दिन मनुष्य को समाप्त कर देगी। ऐसे में क्या करेगा मनुष्य? कहीं से उसे हथियार नहीं लाने पड़ेंगे, वह विनाशकारी शक्ति मनुष्य के ही अन्दर है और वही उसे खा जायेगी। इसलिए संतों के संदेशों को जीवन में अपनाना चाहिए और उनसे ज्ञान को जानकर अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए।

देखो, पहले जब देश पर आफत पड़ती थी, तब महापुरुषों के पास जाते थे और उनसे सलाह और आशीर्वाद माँगते थे कि देश में क्यों ऐसी आपदा आ रही है, इसका क्या कारण है, जिससे इतनी भुखमरी फैल रही है? क्यों इतना व्यभिचार बढ़ता जा रहा है? भारत का इतिहास साक्षी है कि उस समय संत-महापुरुष उन्हें मार्ग दिखाते थे। जो परमात्मा का नाम है, उसको मत भूलो।



देखो, उसको भूलने से तो मनुष्य पर अनेक संकट आते हैं। भगवान के नाम सुमिरन के बिना तो मनुष्य को दुःख ही दुःख है, सुख नहीं है। इसलिए अपने पारिवारिक कार्यों को करते हुए भगवान के नाम का सुमिरन करो। अपनी वृत्ति को अंतर्मुखी बनाओ, तभी विनाश से बचोगे।

अभी आपने सत्संग सुना, हम आध्यात्मिक रूप से अपने देश को बहुत ऊँचा उठाना चाहते हैं। इस देश में गंगा बहती है, इस देश में हिमालय पर्वत है। इस देश में बड़ी-बड़ी सतियों ने जन्म लिया, भक्तों ने जन्म लिया, अवतारों ने जन्म लिया और आज का इतिहास देखो, सवरे-सवरे अखबार देखें, तो पता चलेगा कि ट्रेन लुट गयी, बस लुट गयी, फलानी लड़की के साथ दुष्कर्म हो गया, आजकल यह सब नकारात्मक समाचार छापे जाते हैं।

हे भारतवासियों! ये सब खराब वृत्तियाँ समाज के नाम पर कलंक हैं। इसलिए इन खराब वृत्तियों को, नकारात्मकता को दूर करो, इनसे तो समाज में पाप ही बढ़ेगा, घटेगा नहीं। देख लो, अखबार में आया कि रंगा-बिल्ला को फाँसी हो रही है। अब आपको अच्छी बात याद भी आयी होगी, पर जीवन में तो उन्होंने खराब काम कर लिये। जैसे रावण के राज्य में उसका भाई विभीषण था, पर वह अत्याचार देख नहीं सका और देश को, भाई के घर को तिलांजलि देकर राम की शरण में आ गया। कहता है- भगवान, मैं आपकी शरणागत हूँ, आप मेरी रक्षा करें, मुझसे पाप और अत्याचार देखा नहीं जाता है। मैंने रावण से यही कहा कि माता सीता जगतमाता हैं, भगवान श्री राम की पत्नी हैं, उनसे क्यों वैर करते हो, माता सीता को वापस कर दो, तुम्हारी सारी विपदा दूर हो जायेगी। विभीषण कहता है कि भगवान उसने मुझे लात मारी, लात

मारने पर मुझसे वह पाप सहन नहीं हुआ, निरादर सहन नहीं हुआ, माँ का निरादर सहन नहीं हुआ और मैं आपकी शरण में आ गया। लंका का नाश कैसे होगा- विभीषण ने सारा भेद भगवान को बताकर सारी लंका स्वाहा करवा दी। तो इसी तरह से हमको भी पंचभौतिक शरीर मिला है। इस शरीर के द्वारा अगर अच्छा कर्म करेंगे, तो हमें शान्ति मिलेगी। देखो, गलत काम करके वह इन्सान मर

जो लोग चरित्र से गिर जाते हैं, वे महापुरुषों की कृपा को नहीं समझते, अपने ध्येय को नहीं समझते। हम पहले कैसे थे और संत-महापुरुषों ने हमें कितना महान बना दिया, जो लोग इस बात को नहीं समझते, ऐसे लोगों का पतन हो जाता है।

जाता है, पर उसके गलत कर्म नहीं मिटते। रावण के मरते समय भगवान राम लक्ष्मण को रावण के पास शिक्षा लेने के लिए भेजते हैं। रावण लक्ष्मण से कहता है कि लक्ष्मण, अच्छा काम कल पर नहीं छोड़ना, कल ही का नाम काल है। तो इसी तरह से तीन दिन का यह सत्संग कार्यक्रम आपके लिए किया जा रहा है। हमको तो जरूरत नहीं, हम तो जान चुके हैं। मैं सच कहती हूँ कि हमारे ऊपर तो गुरु महाराज की कृपा है, उन्होंने हमको वह अगाध ज्ञान दे रखा है कि हमें तो जरूरत नहीं। पर जो भक्त लोग इस ज्ञान को जान चुके हैं, उनका प्रयास है कि इसका प्रचार-प्रसार किया जाए। इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार में वे तन-मन-धन से सहयोग कर रहे हैं। यद्यपि वे आर्थिक रूप से कमजोर हैं, गरीब हैं, पर दिल से गरीब नहीं हैं। उनके सहयोग से कितना महान् काम हो रहा है। लोगों के आत्मिक उत्थान के लिए, उन्हें जगाने के लिए वे

निःस्वार्थ कर्म कर रहे हैं। उनको यह इच्छा भी नहीं कि कोई हमारे बच्चों को पढ़ाये, यह इच्छा भी नहीं कि कोई हमको नेता बनाये। ये सब भक्त लोग निःस्वार्थ भाव से गुरु दरबार की सेवा कर रहे हैं।

जिस तरह से श्रीमद्भागवत में उल्लेख आता है कि सातवें दिन राजा परीक्षित की मौत होने वाली थी। सारे ऋषि-मुनि एकत्रित होते हैं, ज्ञानी एकत्रित होते हैं और विचार करते हैं कि यदि अज्ञानी रहते हुए ही राजा संसार से चला जायेगा, तो इसका पाप ज्ञानी को लगेगा। इसलिए हे शुकदेव मुनि, यह पाप तुम्हें लगेगा, तुम ज्ञानी हो करके इस राजा को नहीं बचा रहे हो, जिसकी सातवें दिन मौत हो रही है, इसलिए राजा को बचाओ। तब शुकदेव मुनि कहते हैं- राजन्, संसार में सभी की सातवें दिन ही मौत होती है। जितने भी संसार में प्राणी हैं, सबकी मौत सात दिन के अन्दर ही होती है।

शुकदेव मुनि राजा परीक्षित को सुनाते हैं कि तेरे वंश में तो राजा आधे घंटे के अंदर मोक्ष को प्राप्त हो गये, राजन् सात दिन तो बहुत होते हैं। शुकदेव मुनि राजा परीक्षित को भागवत् की कथा सुनाते हैं और भगवान के उस नाम का ज्ञान करा देते हैं, जो सबमें समायोजित है। ज्ञान को प्राप्त करने के बाद राजा परीक्षित कहता है- हे शुकदेव जी, मैंने मृत्यु को जीत लिया है, अब मुझे इस पंचभौतिक शरीर से कोई भी मोह नहीं है। तो बताना, राजा ने कैसे मौत को जीत लिया और तुम भी मनुष्य हो, पर जैसे नौका पानी में हिलती रहती है, वैसे ही संसार के विषय-भोगों में तुम्हारी वृत्ति रहती है। फिर भी तुम्हारी तृप्ति नहीं होती है, तुम्हारी आशा और तृष्णाएं हमेशा बढ़ती ही रहती हैं, क्योंकि तुम उस अध्यात्म ज्ञान की ओर अपनी वृत्ति को नहीं लगाते!

# परमात्मा को खोजेंगे, तो वह जरूर मिलेगा

माताश्री मंगला जी

**प्रे**मी सज्जनों! भगवान की शक्ति हमारे, तुम्हारे और सभी जीव-जन्तुओं के अन्दर है, पर उस शक्ति का ज्ञान हमें सन्त-महापुरुषों से प्राप्त होता है। उस शक्ति को जानकर ही हम परमतत्व को प्राप्त कर सकते हैं। जितने भी लोग यहां पर सत्संग में आये हैं, सबके नाम भिन्न-भिन्न हैं, पर भगवान का वह कौन-सा नाम है, जो सबके अंदर है। बच्चा जब मां के गर्भ में होता है, तो भगवान के उस नाम का सुमिरण करता है। शरीर का नाम तो हमारे माता-पिता ने दिया, यह तो सांसारिक नाम है। जब हम नौ महीने मां के पेट में थे, तो भगवान का कौन-सा ऐसा नाम था, जिसके लिये कहा-

**उल्टा नाम जपा जग जाना।**

**बाल्मीक भये ब्रह्म समाना।।**

वह कौन-सा नाम है, जिसका भजन-सुमिरण करने के लिए हमें मानुष तन मिला है। मां के गर्भ में हमने भगवान से प्रार्थना की कि हे प्रभु! मुझे इस काल कोठरी से बाहर निकालो, मैं आपके नाम का सुमिरण करूंगा, मैं बाहर आकर तुझे कभी नहीं भूलूंगा। हमारा संसार में जन्म हुआ, हमें माता-पिता मिले। बाहरी प्रकाश देखने को मिला, पर जीव बाहर आकर उस परम प्रकाश का ध्यान करना भूल गया। आप यहां कितनी भी ट्यूब लाइटें जलायेंगे, लेकिन सूर्य के सामने उन सबका प्रकाश फीका पड़ जायेगा। सूर्य कभी किसी से भेदभाव नहीं करता, वह समान रूप से सभी को प्रकाशित करता है। सूर्य हिन्दू के लिये भी निकलता है, मुसलमान के लिए भी और ईसाई के लिये भी। फिर समाज में



अलगाववाद क्यों? एक-दूसरे को मारने की बात क्यों? एक-दूसरे को आगे बढ़ाने की, मदद करने की बात करो। सन्तों ने तो हमेशा समाज को जोड़ने का कार्य किया है। एक फटी हुई चादर और एक फटी हुई बोरी को हम सूई से सिल देते हैं। सन्तों ने सूई की तरह समाज को जोड़ने की बात कही। सन्तों ने तो पूरी दुनियां को ही अपना परिवार माना है।

आध्यात्मिक ज्ञान की सम्पदा के कारण भारत विश्व का गुरु रहा है। विदेशों में हम लोग अध्यात्म ज्ञान का प्रचार करने जाते रहते हैं। हम देखते हैं कि उन लोगों के पास सारी सुख सुविधायें हैं। आप घर में बैठो, बटन दबाओ पर्दा खिड़की से अलग हो जायेगा। आप घर में बैठे-बैठे बटन दबाकर घर के सारे खिड़की-दरवाजे बन्द कर सकते हो। घर के अन्दर बैठे-बैठे अपनी गाड़ी का दरवाजा बन्द कर सकते हैं। लेकिन मन को शांति प्रदान करने का बटन, अध्यात्म ज्ञान का बटन जो भगवान ने अपने हाथों में रखा है,

मनुष्य उस बटन को आज तक अपने वश में नहीं कर सका। अध्यात्म ज्ञान के रहस्य को जानने के लिये विदेश के लोग भारत के ऋषि-मुनियों की शरण में आते हैं। वे सदगुरु महाराज की खोज करते हैं। भारत में ही सदगुरु एवं सच्चा सन्त मिलेगा, जो उस आध्यात्मिक ज्ञान को हमें देगा। भारत ही एक ऐसा देश है जो सन्तों की भूमि है, जहां समय-समय पर महापुरुषों का अवतरण हुआ है। रामचरित मानस में कहा गया है-

**जब जब होय धरम की हानी।**

**बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।**

**तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा।**

**हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा।।**

ऐसा कोई युग नहीं हुआ, जब महापुरुष को मनुष्य शरीर में न आना पड़ा हो। हर काल एवं युग में भगवान मानव शरीर धारण करके आये। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन को वचन दिया कि जब-जब धर्म की हानि होगी, मेरा मनुष्य रूप में अवतार होगा। मैं अपने भक्तों को बचाने स्वयं आऊंगा।

भगवान में ही वह शक्ति होती है कि वह अपने भक्तों को कष्टों से बचा सकता है। भगवान केवल उसी भक्त को बचाता है, जो निरन्तर उसका ध्यान-सुमिरण करता है। भगवान श्रीकृष्ण लड़ाई के मैदान कुरुक्षेत्र में अर्जुन से कहते हैं कि अर्जुन! जो आत्मज्ञान मैंने तुझे दिया है, उसका तू निरन्तर सुमिरण कर और युद्ध भी कर। निरन्तर हमारे अन्दर कौन-सी चीज हो रही है। आंखों का देखना भी निरन्तर नहीं है। हम जब सो जाते हैं, तो हमारी आंखें भी स्वतः ही बन्द हो जाती हैं। हमारे कानों से सुनना भी उस अवस्था में बन्द हो जाता है। हमारे सारे अंग हाथ और पैर भी निष्क्रिय हो जाते हैं। जब मनुष्य गहरी नींद में सोता है, तब उसे नहीं पता रहता कि कौन घर में आया और कौन चला गया। चाहे कोई घर का खजाना ले जाये या घर का सामान ले जाये, सोते समय मनुष्य को कुछ भी पता नहीं रहता। लेकिन जब वह जागता है, तो उसके शरीर के सारे अंग हरकत में आ जाते हैं। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि अर्जुन! तू निरन्तर मेरे अव्यक्त नाम का सुमिरण कर। सोते हुए हमारे अन्दर जो चीज चल रही थी, वह थी हमारी सांस। सांस को हम निरन्तर लेते रहते हैं। सांस ही यदि बन्द हो जाये, तब तो सारी दुनियां का तमाशा ही खत्म हो जायेगा। सांस ही ऐसी क्रिया है, जो हमारे अन्दर निरन्तर चलती रहती है। निरन्तर सुमिरण केवल हम स्वांसों के माध्यम से कर सकते हैं। चौबीस घंटे में हम इक्कीस हजार छह सौ बार सांसों को लेते हैं। उन अनमोल सांसों को घर-गृहस्थी के कार्य में ऐसे ही गंवा देते हैं। सचमुच में जब तक हमने भगवान का नाम नहीं जाना, तब तक हमारे सांस

व्यर्थ ही जा रहे हैं। जैसे कि हम लोग अभी ट्रेन से आये। ट्रेन दोनों पटरियों पर निरन्तर दौड़ रही थी। पटरी जहां-जहां बिछी हुई थी, ट्रेन उसी पर चल रही थी। ऐसे ही हमारा जीवन भी ट्रेन की तरह है। अगर हम चंचल मन को भगवान के नाम में लगा देंगे, तो हमारे जीवन की ट्रेन भी पटरी पर चलती रहेगी। वह पथ भ्रष्ट नहीं होगी, वह पथ से हटेगी नहीं।

सांस ही ऐसी क्रिया है, जो हमारे अन्दर निरन्तर चलती रहती है। निरन्तर सुमिरण केवल हम स्वांसों के माध्यम से कर सकते हैं। चौबीस घंटे में हम इक्कीस हजार छह सौ बार सांसों को लेते हैं। उन अनमोल सांसों को घर-गृहस्थी के कार्य में ऐसे ही गंवा देते हैं। सचमुच में जब तक हमने भगवान का नाम नहीं जाना, तब तक हमारे सांस व्यर्थ ही जा रहे हैं।

यदि निरन्तर भगवान के चरणों में हमारा मन लगा रहेगा तो शरीर भी वहीं लगेगा।

आपने कई ऐसे साधु-संत देखे होंगे जो भगवा रंग का चोगा या वस्त्र पहने हुए हैं, पर उनका मन कहीं और ही घूम रहा है। जब तक हम मन को भगवान के नाम सुमिरण में नहीं लगायेंगे, तब तक जीवन में शांति नहीं मिलेगी। रामचरित मानस में संत तुलसीदास जी कहते हैं-

**कर से कर्म करो विधि नाना।**

**मन राखो जहां कृपा निधाना॥**

हाथों से अपने विभिन्न प्रकार के कार्यों को करो और मन को भगवान के चरणों में लगाकर रखो। आज विज्ञान के माध्यम से हमने भौतिक चीजों में तो बहुत प्रगति कर ली, लेकिन मनुष्य के प्राण बचाने में विज्ञान आज भी असफल है। अन्त में जब डॉक्टर रोगी के प्राण

बचाने का प्रयास करता है, तो उस समय सारी मशीनें भी फेल हो जाती हैं। तब डॉक्टर भी कहता है कि अब दवा की नहीं दुआ की जरूरत है। हम आत्मज्ञान के प्रचार के लिए सब जगह जाते रहते हैं। हर जगह भक्त लोग एक ही बात पूछते हैं कि माता जी, हमें मन की शांति कैसे मिलेगी? मन को हम कैसे ध्यान में टिकाएं? हमारे पास संसार का वैभव है, सुख है, पर शान्ति नहीं है। हम संसार की वस्तुएं खरीद सकते हैं, पर मन की शान्ति को नहीं खरीद सकते हैं।

संतों का सानिध्य और सत्संग मनुष्य के जीवन को बदलने की क्षमता रखता है। रत्नाकर के बारे में आता है कि वे लूटपाट करते थे। एक दिन उन्हें संत नारद जी मिले और रत्नाकर से कहा कि तू यह सब पाप कर्म किसके लिए करता है। रत्नाकर ने कहा कि मैं अपने परिवार के पालन-पोषण के लिये करता

हूं। नारद जी कहते हैं कि तू एक बार अपने घर वालों से पूछकर आ कि जब इसका फल मिलेगा, तो क्या आप उसमें भागीदार बनोगे। रत्नाकर ने घर जाकर सबसे पूछा कि मेरे द्वारा अर्जित पाप कर्म का जब मुझे फल मिलेगा, तो क्या आप लोग उसमें मेरा साथ दोगे। पत्नी, बेटा, बेटी और भाई आदि सभी ने रत्नाकर का साथ देने से मना कर दिया। रत्नाकर को बड़ी निराशा हुई। वापस आकर उन्होंने नारद जी के चरणों में गिरकर क्षमा मांगी। प्रार्थना करने पर नारद जी ने रत्नाकर को आत्मज्ञान दिया जिसके बाद उनका जीवन ही बदल दिया। बाद में वही रत्नाकर महर्षि बाल्मीकि बने और बाल्मीकि रामायण की रचना की।

गाने से तो सारी जिन्दगी बीत जायेगी। व्यक्ति गाता ही रहेगा, राम-



राम रटता ही रहेगा, शिव-शिव रटता ही रहेगा, पर जो शिव स्त्रोत हैं, शिव जो नाम है, उसकी महिमा को समझता है एक मेरे पास आया और बोला कि माता जी भगवान शिव जी के बारे में एक बड़ी विचित्र बात है। मैंने कहा कि क्या? ब्रह्म लोक में ब्रह्मा जी विराजमान हैं, वहाँ कोई मनुष्य नहीं जा सकता है। इन्द्रलोक में कोई मनुष्य नहीं जा सकता है। भगवान् विष्णु के लोक में मनुष्य शरीर में नहीं जा सकता है। पर भगवान शिव जी ने ही अपनी ऐसी जगह कैलाश पर्वत चुनी, जहाँ मनुष्य शरीर में जा सकता है।

शिव जो सबकी पुकार को सुनता है और सचमुच में मैंने सोचा कि बात तो बिल्कुल ठीक है। आज भी कैलाश मान सरोवर में लोगों की तीर्थयात्रा हो रही है। कई लोग कैलाश जाते हैं, वे कहते हैं कि कैलाश पर्वत ऐसी सुन्दर जगह है, जहाँ से आने का मन नहीं करता है। एकबार मनुष्य जब वहाँ पर चला जाता है, तो वह संसार की सब व्याधियों को भूल जाता है। वहाँ पर एक सरोवर है जिसके बारे में वशिष्ठ जी सुनाते हैं कि हे राम! ब्रह्मा जी की इच्छा से, ब्रह्मा जी के मन से वहाँ कैलाश पर्वत पर एक सरोवर का निर्माण हुआ है- वह सरोवर मन से बना है। इसीलिए उसका नाम मानसरोवर पड़ा। वह बड़ा सुन्दर है। ऐसे कैलाश पर्वत में देखो, हम मनुष्य शरीर में जा सकते हैं। इसलिए परमप्रभु शिव ही ऐसे दयालु हैं, जिनके सामने हम अपने मन की बात बता सकते हैं।

शिव जी के बारे में हम जितने भी वेद-पुराण, शास्त्र पुराणों को खोलें तो पता चलता है कि वह हर जगह समाया हुआ है। अज्ञानी इस रहस्य को नहीं

समझ सकता है। अज्ञानी का तो यह नियम है कि सारे साल भर पानी चढ़ाओ, एक बार भगवान की पूजा और बस चंदन लगा लो, तिलक लगा लो, बस यही पूजा है, लेकिन जिस भगवान शिव ने जिस महामंत्र का भजन-सुमिरन किया और काशी में जिसका लोगों की मुक्ति के लिए प्रचार किया, हमें वह नाम जानना है। जिससे हमें सब जगह वही शिव नजर आयें, वही शिव जी हमारी हरपल रक्षा करते हैं, वही भोले नाथ हमें सब जगह

**चौरासी लाख योनियों में भरमते-भरमते यह मनुष्य शरीर मिला है, अगर हम अपने आप को नहीं समझेंगे, हम अपने परम प्रभु को नहीं खोजेंगे, तो पता नहीं फिर हमें यह मनुष्य शरीर मिलता है या नहीं। इसलिए हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि मनुष्य शरीर ही है।**

दिखाई देंगे और फिर हम उनके असली रूप को पहचान जायेंगे। उनके असली रूप को पहचानने के लिए हमें अपने बाहर के नेत्रों को बन्द करना पड़ेगा। हमें माया के नेत्रों से हटाकर भक्ति के मार्ग पर लगाना होगा, तभी हमें उसे परम तत्व की प्राप्ति हो सकती है।

इसलिए शिवरात्रि के पर्व पर हम उन महानपुरुषों को याद भी करते हैं और अगर हम उनके बताये ज्ञान के रास्ते पर चलें, तो वही परम प्रभु मिल जाता है। लेकिन खोजना तो हमने ही है, शिष्य को ही खोजना है, क्योंकि इसी मनुष्य शरीर में हम भक्ति कर सकते हैं, कहा है-

**लख चौरासी भरम दियां,**

**मानुष जनम पायो।**

**कह नानक नाम सम्भाल,**

**सो दिन नेड़े आयो॥**

चौरासी लाख योनियों में भरमते-भरमते यह मनुष्य शरीर मिला है, अगर

हम अपने आप को नहीं समझेंगे, हम अपने परम प्रभु को नहीं खोजेंगे, तो पता नहीं फिर हमें यह मनुष्य शरीर मिलता है या नहीं। इसलिए हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि मनुष्य शरीर ही है। नवधा भक्ति का उल्लेख करते हुए भगवान रामभिलनी से कहते हैं कि 'प्रथम भगति संतन कर संग। सबसे पहले नवधा भक्ति में यही बताया गया कि संतों की सेवा करो, संतों से पूछो, खोजो और ढूँढ़ो, वे तुम्हें सच्चे मार्ग को बतायेंगे, जिस मार्ग पर चलकर वह शिव-तत्व समझ में आयेगा, आत्मज्ञान समझ में आयेगा।

राजा सगर के साठ हजार पुत्रों को शाप मिला था। तब सगर ने अपने पुत्रों के शाप को हटाने के लिए तप किया। गंगा जब भूतल पर आई, तो कोई उसे नहीं संभाल सका। तब भगवान शिव ने अपनी जटायें खोलीं और फिर उसमें गंगा जी समाईं। देखो! इतनी बड़ी गंगा, उस परमप्रभु की महिमा अपरम्पार है कि करोड़ों-अरबों व्यक्ति उस गंगा जी का सेवन करते हैं, फिर भी कभी उसमें कमी नहीं आती। इसलिए उन महानपुरुषों की महिमा हम तभी समझ सकते हैं, जब हम आत्मज्ञान को जान लें और अपने हृदय के अन्धकार को मिटाकर के अपने जीवन को प्रकाशमय कर लें, तभी पता चलेगा। भेद-भाव न करके, सच्ची भावना से जो भक्ति करता हैं, उनको परम तत्व की प्राप्ति होती है। इस शिवरात्रि के पर्व पर सभी को खूब भजन-सुमिरन करना चाहिए और जो अज्ञानी हैं उन्हें आत्मज्ञान जानना चाहिए। क्योंकि आत्मा का ज्ञान ही सारे धर्म-शास्त्रों का निचोड़ है, सारे देवी-देवताओं का वही आशीर्वाद है कि अपने आपको जगायें, उसे ढूँढ़े जरूर तुम्हें भगवान की प्राप्ति होगी।

## FOR MEDITATION ONE NEEDS TO KNOW WHERE TO FOCUS ATTENTION

MATA SHRI RAJESHWARI DEVI

**W**e are conducting satsang programs at many locations. There is a two-day program at Dakpathar (Dehradun) and then at many locations in Delhi.

Without the spiritual teaching shared by Saints, The earth would have been destroyed many times over

Scores of people gather to listen attentively to spiritual discourses given by Saints. People like to understand these teachings. Divine bliss is hidden within man, not outside. Life is limited and we must understand those important spiritual goals that are left to be accomplished. Saints say:

***Now is the time to get up and work for evolution,***

***Nanak said that after death the opportunity is lost***

All those who are born will die. But the worldly attractions are so strong that the man gets entangled and forgets that this is his temporary abode. Yaksha asked Dharamraj—What is the most surprising thing in this world? Dharamraj replied that man loses his parents and children to death, yet he continues to think unabated about household chores

only without making any preparations. This indeed is most surprising.

***Saints and Holy Scriptures have unanimously concluded, That love for Holy Name is the high reward for performing great noble deeds***

Today, a woman came along with her son-in-law and said that it is with your great blessings that he joined us today for the spiritual program as usually he is not interested. I told her that some people are afraid that lessons from Saints may lead to inner transformations. But Saints are here for helping others. If you look at our history, you'll see that sinners like Ratnakar, Angulimal and Ajamil were transformed by contact with Saints. Guru Nanak Ji says:

***"My teacher shared the spiritual knowledge,***

***It dispelled darkness and ignorance,***

***With God's blessings one meets Saints,***

***Their teachings enlighten the heart."***

Saints come to this world to



share their spiritual treasures but man does not understand this. Rich, poor and people from all forms of life come to me and I find they do not have inner happiness. We all work from morning to evening but do not feel satisfied.

This implies that our daily chores will not lead to inner joy. Saints say that man can find true happiness only through Holy Name. Many people believe in a single teacher. Our books tell us that Dattatreya had 24 teachers. He partook teachings from each of them and finally met the teacher who shared Holy Name with him and his thirst for knowledge got quenched. The word for teacher is Guru,

'Gu' means darkness and 'Ru' means light. So Guru is one whose teachings dispel darkness or ignorance. One finds inner peace only through a wise Guru.

Many people say that they sit in meditation practice but they find it difficult to focus their minds. First you need to know what to concentrate or rest your mind on, and only then do you place it there. So one must first learn the objective and then focus the mind on it. One cannot see his reflection if the water is moving, similarly the mind cannot concentrate until it is trained. Peace and stillness allows mind to focus effectively. King Janak saw a dream. He dreamt that the enemies attacked and took over his kingdom and killed many people. King's sons also got captured. He dreamt that he escaped from the palace and ventured into the jungle to save himself. In a state of extreme hunger and thirst, he came across an old woman living in a small hut.

The King asked her for some food, the woman replied that she already ate and the King can cook a rice and lentil mix for himself. The King then gathers wood and lights a fire. He prepares the

food with great difficulty and finally puts the meal on a big leaf to eat. But suddenly two bulls appear from nowhere and are fighting with each other. They spoil the food prepared.

The King begins to cry and his hiccups wake him up. He is amazed at this dream and he questions whether in reality he is a king or a beggar (who begged the old woman for food). He calls his senior ministers and shared his dream with them, and asks them a simple question whether his present reality of being a king is true or his dream reality of being a beggar is true? Not being at peace, the King spoke with many learned people but none was able to satisfy him. He then announces that he will award the kingdom to the person who satisfies his deep thirst for true knowledge.

We reach the final phase of our life without asking the purpose for it. Upon birth we knew nothing, not even who our father and mother are. We knew no language. In the final phase of our lives, the eyes get weak and blurry, the hair turn white, back gets curved and the skin turns loose. But we still don't question the purpose of life. Wise teachers prod us to wake

up from this slumber and search for the divine nectar hidden inside. On partaking it man becomes divine. But man loses his energies in worldly pleasures. To reach gold buried beneath, man has to put efforts and dig. Similarly, our wise teachers guide us to seek within our hearts. Lord Krishna tells Arjuna to turn his senses inwards like a tortoise who withdraws his limbs. But to do that one needs to know the technique as well.

King Janak spoke to many learned men but his doubts were not cleared. Anyone who could not satisfy King's questions was put in jail. One day, young boy Ashtavakra was playing with his friends. These kids teased Ashtavakra that his father is in jail and they wouldn't play with him. Ashtavakra came home crying and asked his mother about his father. She told him that his father was jailed by King Janak as he couldn't give detailed explanations to the King's questions. She also told him that not just the highest seat of the palace but also the entire kingdom would be awarded to the person who gives the correct answers, and that no one has yet satisfactorily answered the King's queries.



# वैशाखी महोत्सव : इतिहास और सामाजिक एकता का आध्यात्मिक संदेश

**ह**मारा देश भारत त्योहारों का देश है, जहाँ के हर पर्व-त्योहार केवल आनंद और उल्लास के प्रतीक नहीं, बल्कि उनमें गहरे आध्यात्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक एकता के संदेश भी निहित होते हैं। ऐसा ही एक महत्वपूर्ण पर्व है वैशाखी, जिसे विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा, उत्तर भारत और देश के अन्य हिस्सों में विविध नामों से बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस पर्व का महत्व केवल धार्मिक नहीं, बल्कि कृषि, ज्योतिष, सामाजिक एकता और भारतीय संस्कृति के संरक्षण से भी जुड़ा हुआ है।

यह पर्व न केवल खालसा पंथ की स्थापना का दिवस है, बल्कि इसे किसानों के नई फसल के पर्व के रूप में भी मनाया जाता है।

ज्योतिषीय दृष्टि से, इस दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, जिसे मेष संक्रांति कहते हैं। इसे नए कार्यों की शुरुआत, दान-पुण्य और आध्यात्मिक साधना के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। लेकिन सिख पंथ में तो वैशाखी का

विशेष महत्व है, क्योंकि सन् 1699 में गुरु गोबिंद सिंह जी ने इसी दिन खालसा पंथ की स्थापना की थी। यह घटना केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और ऐतिहासिक रूप से भी क्रांतिकारी थी। कहते हैं कि गुरु गोबिंद सिंह जी ने आनंदपुर साहिब में वैशाखी के दिन एक विशाल सभा का आयोजन किया और वहाँ उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं के समक्ष एक प्रश्न रखा— ‘क्या कोई सिख धर्म और सच्चाई की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने को तैयार है?’ पहले एक सिख आगे आया, फिर धीरे-धीरे पाँच सिखों ने

अपने प्राणों की आहुति देने की स्वीकृति दी। इन्हें गुरु गोबिंद सिंह जी ने ‘**पंच प्यारे**’ की उपाधि दी और उन्हें अमृत छका कर पहले खालसा सिख बनाया। इसके बाद उन्होंने अपने सभी अनुयायियों को पाँच ककार यानी केश, कंघा, कड़ा, कच्छा और कृपाण धारण करने का आदेश दिया। सच कहिए तो गुरु गोविंद सिंह जी के द्वारा स्थापित खालसा पंथ केवल एक धार्मिक संगठन नहीं था, बल्कि यह एक सामाजिक क्रांति थी, जिसने अत्याचार, अन्याय और भेदभाव के खिलाफ संगठित संघर्ष करने का संदेश दिया।



इस प्रकार वैशाखी पर्व केवल धार्मिक ही नहीं बल्कि सामाजिक एकता का भी संदेश देता है। यह पर्व हमें जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीय भेदभाव से ऊपर उठकर एकता का परिचय देने की प्रेरणा प्रदान करता है। यह पर्व सबको समानता और भाईचारे का संदेश देता है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना करते समय यह स्पष्ट किया कि समाज में कोई ऊँच-नीच नहीं है, सभी समान हैं। यह संदेश आज भी भारतीय समाज के लिए बहुत प्रासंगिक है। यह पर्व कृषि और श्रम की महत्ता को भी बड़ी समग्रता से

समझाया करता है। वैशाखी किसानों का सबसे बड़ा पर्व है। यह दिन उनकी कड़ी मेहनत का सम्मान करता है और यह दर्शाता है कि श्रम ही सच्ची पूजा है। यह पर्व हमें अपनी परंपराओं, लोककला, संगीत, नृत्य और रीति-रिवाजों को

लंगर का आयोजन बड़े हर्षोल्लास से किया जाता है। पंजाब क्षेत्र में अनेक भव्य आयोजन होते हैं। मेले लगते हैं, लोक-नृत्य यानी भांगड़ा-गिद्धा होते हैं, और फसल कटाई की खुशियाँ मनाई जाती हैं। भारत के कई प्रांतों के



जीवंत बनाए रखने की प्रेरणा देता है। पंजाब में इस दिन भांगड़ा और गिद्धा नृत्य के माध्यम से खुशियाँ मनाई जाती हैं, जो भारतीय लोक-संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

आज के बदलते दौर में भी जब समाज में संकीर्णता, असहिष्णुता और सांस्कृतिक मर्यादाओं के क्षरण की समस्याएँ बढ़ रही हैं, वैशाखी का संदेश और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। हमें यह सिखाता है कि सभी धर्मों और समुदायों को समान रूप से सम्मान देना चाहिए। हमें जाति, भाषा और क्षेत्रवाद के संकीर्ण दायरे से बाहर निकलकर एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना को मजबूत करना चाहिए। यह बात हमें सदैव याद रखनी चाहिए कि बदलते पर्यावरण की वजह से हमें किसानों में विशेष रूप से सचेत रहने की जरूरत है तथा पर्यावरण संतुलन में भी अधिक सचेष्ट रहने की आवश्यकता है। जब जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बढ़ रहा है, तब हमें कृषि और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। वैशाखी का उत्सव विशेष रूप से गुरुद्वारों में आयोजित किया जाता है। वहां गुरुद्वारों में कीर्तन, अरदास और

लोग इस दिन गंगा और अन्य पवित्र नदियों में स्नान कर धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। वैशाखी का उत्सव गुरुभक्तों को गुरु की आज्ञा में समर्पित हो पांच प्यारों के आदर्श की याद दिलाता है। यह केवल एक पर्व नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक मूल्यों का प्रतीक पर्व है। यह हमें समानता, परिश्रम, सत्य और धार्मिक सहिष्णुता की प्रेरणा देता है। आज जब समाज में विघटनकारी शक्तियाँ सक्रिय हैं, तब वैशाखी का संदेश हमें एकता, भाईचारे और सशक्त समाज के निर्माण का संकल्प लेने की प्रेरणा देता है। यह पर्व हमें चालीस मुक्तों की भी याद दिलाता है जो गुरु आज्ञा में अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिए थे। ये ऐसे गुरु भक्त हैं जो सभी शिष्यों को गुरु आज्ञा के महत्व के साथ उनके एक इशारे पर धर्म, संस्कृति और मानवता की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए आदर्श हैं। वैशाखी हमें ऐसे ही महान बलिदानी शिष्यों, भक्तों एवं योद्धाओं की याद दिलाती है। आइए, इस वैशाखी पर हम सभी गुरु गोबिंद सिंह जी के बताए मार्ग पर चलें और भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों को संजोकर रखें। ■



# रामराज्य : संसार की एक आदर्श शासन व्यवस्था

**ह**मारी सनातन संस्कृति में रामनवमी महापर्व केवल भगवान राम का पावन जन्मोत्सव नहीं है, बल्कि यह सनातन धर्म की मर्यादा और मानवता की स्थापना का प्रतीक पर्व भी है। यह पर्व हमें केवल ऐतिहासिक या धार्मिक कथा तक सीमित नहीं रखता, बल्कि यह हमें आदर्श शासन व्यवस्था, जिसे हम रामराज्य कहते हैं, उसकी महिमा और प्रासंगिकता को समझने का अवसर भी प्रदान करता है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि रामराज्य केवल एक कल्पना नहीं, बल्कि एक आदर्श व ऐसी शासकीय व्यवस्था है, जिसे अपनाकर हम आज भी एक सशक्त और समृद्ध समाज की स्थापना कर सकते हैं। रामराज्य का उल्लेख वाल्मीकि रामायण और तुलसीदास कृत रामचरितमानस में बड़े विस्तार से पढ़ने को मिलता है। तुलसीदासजी के शब्दों में-

**सब नर करहिं परस्पर प्रीती।**

**चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।**

इससे स्पष्ट होता है कि रामराज्य केवल भौतिक समृद्धि का प्रतीक नहीं था, बल्कि यह आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित था। इसमें हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करता था और समाज में परस्पर प्रेम और सहयोग का वातावरण था। यह आदर्श समाज का वह स्वरूप था, जहां कोई भी भूखा या असंतुष्ट नहीं था। रामराज्य का मूल आधार धर्म और न्याय था। भगवान राम ने एक ऐसे राज्य की स्थापना की, जो सत्य, करुणा और समता पर आधारित था। उनके शासन में राजा केवल शासक नहीं, बल्कि जनता का सेवक और पालक था। यह दृष्टिकोण आधुनिक लोकतंत्र के सिद्धांतों का भी आदर्श स्वरूप है, जहां जनता की भलाई और सुरक्षा सर्वोपरि मानी जाती है। रामराज्य में कानून और व्यवस्था को नैतिकता और धर्म के साथ जोड़ा गया था। यह आज के समय में अत्यधिक प्रासंगिक है, जब सामाजिक असमानता और भ्रष्टाचार ने हमारी शासन व्यवस्था को कमजोर बना दिया है। रामराज्य की विशेषता यह थी कि इसमें न केवल भौतिक समृद्धि थी, बल्कि मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक संतोष भी था। हर व्यक्ति अपने कर्तव्य का पालन करता

था और अपने अधिकारों के प्रति भी सजग था। आज, जब समाज में व्यक्तिगत स्वार्थ और नैतिक पतन की समस्या बढ़ रही है, रामराज्य का यह आदर्श हमें यह सिखाता है कि सच्ची समृद्धि केवल भौतिक साधनों में नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में निहित है। रामनवमी का यह महापर्व हमें यह संदेश देता है कि एक आदर्श शासन व्यवस्था केवल नीतियों और कानूनों से



संभव नहीं होती, बल्कि इसके लिए **रामनवमी पर विशेष** नेतृत्व का आदर्श होना आवश्यक होता है। भगवान राम का जीवन केवल एक राजा के रूप में नहीं, बल्कि एक आदर्श पुत्र, भाई, पति और मित्र के रूप में भी प्रेरणा देता है। उन्होंने अपने आचरण से दर्शाया कि एक राजा को केवल शासन करना नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग की भलाई के लिए अपने निजी सुखों और इच्छाओं का भी त्याग करना चाहिए।



यह आज के नेताओं के लिए एक बड़ा संदेश है, जो अक्सर व्यक्तिगत लाभ को जनता की भलाई से ऊपर रखते हैं। भगवान राम ने समाज के हर वर्ग, चाहे वह वनवासी हो, वानर हो या राक्षस कुल का हो, सभी को समान दृष्टि से देखा और उन्हें अपने राज्य का अंग बनाया। उनकी यह समदर्शिता यह दर्शाती है कि रामराज्य में जाति, वर्ग, और अन्य भेदभावों के लिए कोई स्थान नहीं था। यह विचार आज भी प्रासंगिक है, जब समाज में जातीय और सांप्रदायिक विभाजन ने हमारे सामाजिक ढांचे को कमजोर कर दिया है। रामराज्य का आदर्श हमें यह सिखाता है कि सच्ची प्रगति तब होती है, जब हर व्यक्ति को समान अवसर और सम्मान मिलता है। रामनवमी का पर्व हमें यह भी याद दिलाता है कि रामराज्य की स्थापना के लिए केवल शासक का आदर्श होना पर्याप्त नहीं है; जनता का भी समान रूप से जिम्मेदार होना आवश्यक है। रामराज्य में हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करता था और समाज की भलाई में योगदान देता था। आज, जब हम अधिकारों की बात तो करते हैं, लेकिन कर्तव्यों की उपेक्षा करते हैं,

रामराज्य का यह संदेश और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। रामराज्य का सबसे बड़ा संदेश यह है कि शांति, समृद्धि, और सुख का आधार केवल धन और शक्ति नहीं, बल्कि नैतिकता, परस्पर प्रेम और सेवा की भावना है, जिसका मूल धर्म और अध्यात्म है।

रामनवमी का यह महापर्व हमें यह सिखाता है कि रामराज्य केवल इतिहास का हिस्सा नहीं, बल्कि यह हर समय और समाज के लिए एक आदर्श है। यह हमें प्रेरित करता है कि हम अपने जीवन में सत्य, धर्म और न्याय को स्थान दें तथा समाज को एक बेहतर दिशा में ले जाने का प्रयास करें। रामनवमी का यह पर्व हमें यह सिखाता है कि सच्चा शासन वही है, जो जनता की भलाई और समाज की समृद्धि को प्राथमिकता देता है। यह महापर्व हमें अपने भीतर की बुराइयों को समाप्त कर, एक आदर्श समाज की स्थापना के लिए प्रेरित करता है। आएं, हम सब रामनवमी पर भगवान राम के आदर्शों को आत्मसात करें और रामराज्य के सिद्धांतों को अपने जीवन और समाज में लागू करें। यही इस पर्व और श्री राम का सच्चा संदेश है। ■

## भगवान श्रीराम का माता कौशल्या को भक्ति का उपदेश

**अ**ध्यात्म रामायण में प्रसंग है कि एक दिन जब श्री रघुनाथ जी एकान्त में ध्यानमग्न थे, प्रियभाषिणी माता श्री कौशल्या जी ने उन्हें साक्षात् नारायण जानकर अति भक्तिभाव से उनके पास आ उन्हें प्रसन्न जान अति हर्ष से विनय पूर्वक कहा-“हे राम! तुम संसार के आदि कारण हो तथा स्वयं आदि, अन्त और मध्य से रहित हो। तुम परमात्मा, परानन्दस्वरूप, सर्वत्र पूर्ण, जीव रूप से शरीररूप पुर में शयन करने वाले और सबके स्वामी हो; मेरे प्रबल पुण्य के उदय होने से ही तुमने मेरे गर्भ से जन्म लिया है। हे रघुश्रेष्ठ! अब अन्त समय में मुझे आज ही समय मिला है, अभी तक मेरा अज्ञानजन्य संसार-बन्धन पूर्णतया नहीं टूटा। हे विभो! मुझे संक्षेप में कोई ऐसा उपदेश दीजिए जिससे अब भी मुझे भव-बन्धन काटने वाला ज्ञान हो जाये।

तब मातृ भक्त, दयामय, धर्मपरायण भगवान राम ने अपनी अत्यन्त वृद्ध शुभ लक्षणा माता से कहा-“मैंने पूर्व काल में मोक्ष प्राप्ति के साधन रूप तीन मार्ग बतलाये हैं-कर्मयोग, ज्ञान योग और सनातन भक्ति योग। हे मात! साधक

के गुणानुसार भक्ति के तीन भेद हैं। जिसका जैसा स्वभाव होता है, उसकी भक्ति भी वैसे ही भेद वाली होती है। जो पुरुष हिंसा, दम्भ या मात्सर्य के उद्देश्य से भक्ति करता है तथा जो भेद दृष्टि वाला और क्रोधी होता है, वह तामस भक्त माना गया है। जो फल की इच्छा वाला, भोग चाहने वाला तथा धन और यश की कामना वाला होता है और भेद बुद्धि से प्रतिमा आदि में मेरी पूजा करता है, वह रजोगुणी होता है। तथा जो पुरुष परमात्मा को अर्पण किये हुए कर्म-सम्पादन करने के लिए अथवा ‘करना चाहिए’ इसलिए भेद बुद्धि से कर्म करता है, वह सात्विक है। जिस प्रकार गंगा जी का जल समुद्र में लीन हो जाता है, उसी प्रकार जब मनोवृत्ति मेरे गुणों के आश्रय से मुझ अनन्त गुणधाम में निरन्तर लगी रहे, तो वही मेरे निर्गुण भक्ति योग का लक्षण है। मेरे प्रति जो निष्काम और अखण्ड भक्ति उत्पन्न होती है, वह साधक को सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य चार प्रकार की मुक्ति देती है; किन्तु उसके देने पर भी वे भक्तजन मेरी सेवा के अतिरिक्त और कुछ ग्रहण नहीं करते। हे मात! भक्ति मार्ग का आत्यन्तिक

योग यही है। इसके द्वारा भक्त तीनों गुणों को पार कर मेरा ही रूप हो जाता है।

अब इस निर्गुण भक्ति का साधन बतलाता हूँ- अपने धर्म का अत्यन्त निष्काम भाव से आचरण करने से, अत्युत्तम हिंसाहीन कर्मयोग से मेरे दर्शन, स्तुति, महापूजा, स्मरण और वन्दन से, प्राणियों में मेरी भावना करने से, असत्य के त्याग और सत्संग से महापुरुषों का अत्यन्त मान करने से, दुःखियों पर दया करने से, अपने समान भक्त साधक पुरुषों से मैत्री करने से, यम-नियमादि का सेवन करने से, वेदान्त वाक्यों का श्रवण करने से, मेरा नाम-संकीर्तन करने से, सत्संग और कोमलतापूर्ण व्यवहार से, अहंकार का त्याग करने से और

सन्तोष नहीं होता। अन्य जीवों का तिरस्कार करने वाले प्राणियों से प्रतिमा में पूजित होकर भी मैं वास्तव में पूजित नहीं होता। मुझ परमात्मदेव का अपने कर्मों द्वारा प्रतिमा आदि में तभी तक पूजन करना चाहिए, जब तक कि समस्त प्राणियों में और अपने-आप में मुझे स्थित न जाने। जो अपने आत्मा और परमात्मा में भेद बुद्धि करता है, उस भेददर्शी को मृत्यु अवश्य भय उत्पन्न करती है; इसमें सन्देह नहीं।

**तावन्मामर्चयेद्देवं प्रतिमादौ स्वकर्मभिः।**

**यावत्सर्वेषु भूतेषु स्थितं चात्मनि न स्मरेत्॥**

**यस्तु भेदं प्रकुरुते स्वात्मनश्च परस्य च।**

**भिन्नदृष्टेर्भयं मृत्युस्तस्य कुर्यान्न संशयः॥**



इसलिए अभेददर्शी भक्त समस्त प्राणियों में स्थित मुझ एकमात्र परमात्मा का ज्ञान, मान और मैत्री आदि से पूजन करे। इस प्रकार मुझे शुद्ध चेतन को ही जीव रूप से स्थित जानकर बुद्धिमान पुरुष अहर्निश सब प्राणियों को चित्त से ही प्रणाम करे। इसलिए जीव और ईश्वर का भेद कभी न देखे। हे मात! मैंने तुमसे यह भक्तियोग और ज्ञानयोग का वर्णन किया। इनमें से एक का भी अवलम्बन करने से पुरुष आत्यन्तिक

मेरे भागवत-धर्मों की इच्छा करने से, जिसका चित्त शुद्ध हो गया है, वह पुरुष मेरे गुणों का श्रवण करने से ही अति सुगमता से मुझे प्राप्त कर लेता है। जिस प्रकार वायु द्वारा गन्ध अपने आश्रय को छोड़कर घ्राणेन्द्रिय में प्रविष्ट होता है, उसी प्रकार योगाभ्यास में लगा हुआ चित्त आत्मा में लीन हो जाता है। समस्त प्राणियों में आत्मरूप से मैं ही स्थित हूँ। हे मात! उसे न जानकर मूढ़ पुरुष केवल बाह्य भावना करता है।

**सर्वेषु प्राणिजातेषु ह्यहमात्मा व्यवस्थितः।**

**तमज्ञात्वा विमूढात्मा कुरुते केवलं बहिः॥**

किन्तु क्रिया से उत्पन्न हुए अनेक पदार्थों से भी मेरा

शुभ प्राप्त कर लेता है। अतः हे मात! मुझे सब प्राणियों के अन्तःकरण में स्थित जानते हुए अथवा पुत्र रूप से भक्तियोग के द्वारा नित्यप्रति स्मरण करते रहने से तुम शान्ति प्राप्त करोगी। भगवान राम के ये वचन सुनकर कौसल्या जी आनन्द से भर गयीं। और हृदय में निरन्तर श्री रामचन्द्र जी का ध्यान करती हुई संसार-बन्धन को काटकर तीनों प्रकार की गतियों को पारकर परम गति को प्राप्त हुईं। भगवान श्री राम का यह भक्ति उपदेश हम सभी जीवों के लिए परम कल्याणकारी है, जिसे आत्मसात कर हम अपनी आत्मा का उद्धार कर सकते हैं। ■



# जीवन में सहजता, सरलता और सुख के लिए धैर्य जरूरी

**म**नुष्य को जीवन में सहजता, सरलता और सुख लाने के लिए अनेकानेक गुणों की जरूरत होती है, उनमें से प्रमुख है-धैर्य। धैर्य ही मनुष्य का साथी होता है। धैर्य न होने पर मनुष्य अपना सहज स्वभाव भी छोड़ देता है। परिस्थितियों को देखकर वह अपने आपको बदल लेता है।

इस तरह धैर्य के अभाव में मनुष्य कई बार अपना नुकसान कर बैठता है। धैर्य बिना मनुष्य सरलता से जीवन-यापन नहीं कर सकता। धैर्य जीवन जीने की कला है। धैर्य धर्म का पहला लक्षण है। कहा गया है-

**धृतिः क्षमा दमो अस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।**

**धीविद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥**

यानी धैर्य, क्षमा, दम, चोरी न करना, शुचिता, इंद्रिय-संयम, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध का त्याग-धर्म के ये दस लक्षण हैं। धैर्य को यहाँ पहले स्थान पर रखा गया है। वास्तव में जिस व्यक्ति में धैर्य नहीं है, वह धार्मिक नहीं हो सकता और जिस धर्म में धैर्य या सहिष्णुता का अभाव है, वह धर्म ही नहीं है।

हमारे दैनिक जीवन में भी तो लगभग यही हो रहा है। किसी न किसी तरह की तलवार हमारे सिर पर लटकी ही रहती है। हम हर क्षण किसी न किसी प्रकार के तनाव से ग्रस्त रहते हैं। इसका प्रमुख कारण धैर्य की कमी ही है। हम सब कुछ आज और इसी समय हासिल कर लेना चाहते हैं। धैर्य के अभाव में हम अनैतिक ही नहीं, अपराधी बनते जा रहे हैं। किसी वस्तु को तत्क्षण पाने के लिए झूठ बोलने से परहेज नहीं करते। निरीह बन जाते हैं जो हम वास्तव में हैं नहीं। धैर्य इतना कम हो गया है कि किसी कार्य को करने से पहले परिणाम के बारे में सोचते तक नहीं। इसीलिए कोई गलत काम कर बैठते हैं और उसका बुरा परिणाम भुगतना ही पड़ता है।

धैर्य नहीं तो क्षमा करना भी संभव नहीं है। धैर्य के अभाव में न तो मन पर नियंत्रण करना संभव है और न मन से कोई अच्छा संकल्प लेना संभव है। जब तक हमारा संकल्प स्पष्ट न हो, हम लक्ष्य कैसे साध सकते हैं। एक धैर्य है तो अन्य सभी लक्षणों का विकास सहजता से होना अत्यंत सरल है। धैर्य धारण करना या किसी कार्य के पूर्णता तक पहुँचने के

लिए उचित समय तक प्रतीक्षा करना अनिवार्य है। कहते हैं हथेली पर सरसों नहीं जमती। धैर्य का अर्थ है सहजता-स्वाभाविकता। कबीर ने भी कहा है-

**धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।**

**माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय॥**



यानी सही समय आने पर ही पेड़ों पर फल लगते हैं और समय पर ही पक कर खाने योग्य होते हैं। तुलसीदास ने भी कहा है-

**धीरज धर्म मित्र अरु नारी।**

**आपद काल परिखिअहिं चारी॥**

विपत्ति की घड़ी में धैर्य की परीक्षा होती है। कार्यों के स्वाभाविक रूप से संपन्न होने की प्रतीक्षा करनी ही होगी। प्रकृति के विरुद्ध जाना या बेवजह प्रयास करना निरर्थक होगा। जीवन को सरल, सहज और सुंदर बनाने के लिए धैर्य का विकास करना ही बेहतर है। जीवन में धैर्य की उत्पत्ति तभी होगी, जब हम उसके उद्गम आत्मा को जानेंगे। बिना आत्मज्ञान के कोई भी इस संसार की चकाचौंध के आकर्षण और प्रतिस्पर्धा से बच नहीं सकता है। इसलिए हमें धर्म के साथ उस आत्मज्ञान की ओर अग्रसर होना होगा, तभी हमारे भीतर सहजता, सरलता और सुख का विकास होगा। ■



लाईकरस ग्रीस के एक विद्वान थे। मैं रहो। लेकिन जब कभी तुम्हें मेरी कोई छोटी-सी वह सच्चे कर्मनिष्ठ तो थे ही, असहाय भी भूल दिखाई दे या मेरे सेवा कार्य में तनिक भी और पीड़ितों की सेवा के लिए भी विख्यात थे। उनकी प्रसिद्धि के कारण कुछ लोग उनसे जलते भी थे। एक दिन घर लौटते समय रास्ते में एक ऐसा व्यक्ति मिला, जो उन्हें हरदम नुकसान पहुँचाने के बारे में सोचता रहता था। वह व्यक्ति रास्ते में उनकी खूब निंदा करता रहा, उनके बारे में अनाप-शनाप बोलता रहा। लाईकरस शांत भाव से अपने घर की ओर चलते रहे। उन्होंने न तो नाराजगी जताई और न ही उससे कुछ कहा।

घर के नजदीक आ जाने पर भी उस व्यक्ति की गालियां खत्म नहीं हुई, तो लाईकरस ने बड़ी शालीनता से कहा, 'भाई, मेरे घर तक आ ही गए हो तो एक-दो दिन अतिथि बनकर यहीं रह जाओ।' लाईकरस की यह बात सुनकर वह व्यक्ति मन ही मन बहुत खुश हुआ कि चलो, अब इसके घर में रहकर इसकी निंदा करने का खूब मौका मिलेगा। वह व्यक्ति लाईकरस के घर पर तीन दिनों तक रहा और उनकी निंदा और बुराई करता रहा। लाईकरस चुपचाप उसकी सेवा में लगे रहे।

आखिरी दिन जब वह वहाँ से विदा लेने लगा तो लाईकरस के सामने चुपचाप खड़ा हो गया। उस व्यक्ति का भाव बदल गया था। वह पश्चाताप कर रहा था। उसने लाईकरस से निवेदन किया, आपके साथ रहकर निंदा करने का मेरा स्वभाव खत्म हो जाएगा।' लाईकरस ने कहा, 'बताइए, आप जो कहेंगे, मुझे मान्य होगा।' लाईकरस ने कहा, 'जब तक तुम्हारी इच्छा हो, मेरे घर

## निंदक नियरे राखिए

ढिलाई देखो, तो मुझे तुरंत बता देना। उस समय तुम्हारा मुझे टोकना मेरे लिए हितकर होगा।' किन्तु लाईकरस की सेवा से उसका स्वभाव बदल चुका था, इसलिए उसने उनसे क्षमा मांगी। ■

### अप्रैल, 2025 के पर्व-त्योहार

□ 6 अप्रैल रविवार- रामनवमी एवं माताश्री राजेश्वरी जयंती "मातृ शक्ति दिवस" □ 10 अप्रैल गुरुवार- महावीर जयंती □ 12 अप्रैल शनिवार- हनुमान जयंती चैत्र पूर्णिमा □ 14 अप्रैल सोमवार- वैशाखी □ 29 अप्रैल मंगलवार- परशुराम जयंती □ 30 अप्रैल बुधवार- अक्षय तृतीया

## ठुमक चलत रामचंद्र

ठुमक चलत रामचंद्र, बाजत पैँजनियां॥ टेक॥  
किलकि किलकि उठत धाय, गिरत भूमि लटपटाय।  
धाय मात गोद लेत, दशरथ की रनियां।  
ठुमक चलत रामचन्द्र, बाजत पैँजनियां॥ 1॥  
अंचल रज अंग झारि, विविध भांति सो दुलारि।  
तन मन धन वारि वारि, कहत मृदु बचनियां।  
ठुमक चलत रामचन्द्र, बाजत पैँजनियां॥ 2॥  
विद्रुम से अरुण अधर, बोलत मुख मधुर मधुर।  
सुभग नासिका में चारु, लटकत लटकनियां।  
ठुमक चलत रामचन्द्र, बाजत पैँजनियां॥ 3॥  
तुलसीदास अति आनंद, देख के मुखारविंद।  
रघुवर छबि के समान, रघुवर छबि बनियां।  
ठुमक चलत रामचन्द्र, बाजत पैँजनियां॥ 4॥

# धूमधाम से मनाया गया महाशिवरात्रि महापर्व भगवान शिव हैं कल्याण के देवता- माताश्री मंगला जी

श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली। महाशिवरात्रि एक पावन पर्व है जो संपूर्ण भारत के साथ-साथ नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, मौरिशस के साथ अनेक देश में भी धूमधाम से मनाया जाता है। यह एक ऐसा पर्व है जिसमें साधक शिव की आराधना कर

आराधना का विशेष महत्व है। मान्यता है कि इस दिन भगवान शिव और पार्वती का शुभ विवाह हुआ था। शिव और शक्ति के महामिलन का यह पर्व सभी को यही संदेश देता है कि शिव को प्राप्त करने के लिए निष्काम भाव से माता पार्वती की तरह एकनिष्ठ भाव से शिव आराधना

मिलन ही शिव-शक्ति का महामिलन है।

इसी महाशिवरात्रि के सुअवसर पर 26 फरवरी, 2025 को परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के सानिध्य में श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में जनकल्याण समारोह का आयोजन किया गया



महाशिवरात्रि के उपलक्ष में आयोजित जनकल्याण समारोह को सम्बोधित करते हुए माताश्री मंगला जी एवं मंच पर विराजमान परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

उनका कृपा प्रसाद प्राप्त करता है। भारत में प्रमुख रूप से 12 ज्योतिर्लिंग हैं, जहाँ महाशिवरात्रि के सुअवसर पर लाखों भक्त पहुँच कर रुद्राभिषेक, पूजा, आराधना कर शिव के प्रति अपनी भाव भक्ति प्रदर्शित करते हैं। वैसे तो हर सप्ताह सोमवार के दिन शिव मंदिरों में शिव भक्तों की भारी भीड़ जुटती है, किन्तु महाशिवरात्रि पर्व की पूजा-

करने की जरूरत है। जिस तरह माता पार्वती ने संकल्पबद्ध होकर बिना किसी संशय और दुविधा के एकनिष्ठ भाव से एकमेव शिव की प्राप्ति के लिए शिव आराधना की थी, उसी तरह हम सबको भी उसी भाव और संकल्प के साथ शिव की भक्ति करने की जरूरत है, तभी हम शिव के वास्तविक स्वरूप का बोध प्राप्त कर सकेंगे। आत्मा और परमात्मा का

जिसमें दिल्ली एनसीआर के साथ-साथ विभिन्न प्रांतों से भगवत् भक्त और महात्मा-बाईगण ने शामिल होकर उनके दर्शन और प्रवचन से लाभ उठाया। आश्रम परिसर में स्थित सत्संग हॉल में एक भव्य मंच बनाया गया जिसे सुन्दर शिव छवि के साथ पत्र, पुष्पों और कार्यक्रम के बैनर से सुसज्जित किया गया। जनकल्याण समारोह की शुरुआत



शिव आराधना से की गई। श्री भूपिन्दर सिंह, श्याम जी और रॉकी सैनी ने बारी-बारी से सुन्दर भजनों की प्रस्तुति की।

विराजमान परमात्मा रूप शिव के साथ एकाकार होना चाहिए। अपनी आत्मा में जागरण करना ही शिवरात्रि का जागरण

ने महाशिवरात्रि पर्व के उपलक्ष में सभी को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि महाशिवरात्रि के सुअवसर पर हमें अपने



महाशिवरात्रि के उपलक्ष में आयोजित जनकल्याण समारोह में उपस्थित श्रोतागण प्रवचन श्रवण करते हुए

बीच-बीच में महात्मा-बाईगण के सत्संग भी हुए। सर्वप्रथम श्री मंगल जी ने शिव महिमा से संबंधित अपना उद्बोधन किया जिसमें उन्होंने शिवरात्रि मनाने के पीछे प्रचलित कथाओं को सुनाया तथा शिवरात्रि के महत्व पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात महात्मा शिवकृपानंद जी ने शिव की महिमा का उल्लेख करते हुए कहा कि शिव नित्य गुरु हैं, वे सदैव गुरु रूप में संसार के जीवों के कल्याण के लिए विराजमान रहते हैं। इसीलिए उन्हें कल्याण का देवता कहा जाता है। एक भजन हुआ फिर महात्मा आत्मसंतोषीबाई जी ने अपने सम्बोधन में समझाया कि शिवरात्रि का पर्व हमें यह संदेश देता है कि जिस तरह शिव तटस्थ रूप से कैलाश पर विराजमान होकर ध्यानस्थ हैं, वैसे ही हमें भी अपने मन को अंतर्मुखी कर अपने हृदय में

है। जो आत्मा के ज्ञान से वंचित हैं, उनके लिए महाशिवरात्रि का कोई विशेष महत्व नहीं है।

इसी बीच परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी का मंच पर पदार्पण हुआ, तो गगनभेदी जय-जयकार “परमपूज्य श्री भोले जी महाराज की जय, करुणामयी माताश्री मंगला जी की जय” से सम्पूर्ण पंडाल गूंज उठा। प्रेमी भक्त अत्यधिक उत्साह और आनंद से एकटक माताजी-महाराज जी की दिव्य छवि को निहार कर निहाल हो रहे थे। श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी भी अत्यधिक करुणा भरी दृष्टि से सबको निहार रहे थे, उनके दिव्य नेत्रों से करुणा की बरसात हो रही थी।

प्रेमीभक्तों से खचाखच भरे पंडाल को सम्बोधित करते हुए माताश्री मंगला जी

अंदर के पट को खोलना है। हमारे घट के अंदर ही वह शिव-शक्ति विराजमान हैं। जब माया के पर्दे को हटायेंगे तो वह स्पष्ट रूप से नजर आयेंगे। जैसे बाहर की दुनिया को देखने के लिए चर्म चक्षुओं की जरूरत है, वैसे ही हृदय के अन्दर परमात्मा को देखने के लिए दिव्य दृष्टि की आवश्यकता है, जो सद्गुरु की कृपा से प्राप्त होता है। उन्होंने कहा कि इस बार 144 साल बाद महाकुम्भ पर्व प्रयागराज में आयोजित किया गया जिसमें देश-विदेश से करोड़ों भक्तों, श्रद्धालुओं, तीर्थयात्रियों, स्नानार्थियों, शोधार्थियों एवं मेला देखने वालों के साथ साधु, संत, महंत, मंडलेश्वर, महामंडलेश्वर, आचार्य और गुरुओं के आगमन के साथ ऐसे अलौकिक महापुरुष भी आए जिन्हें वे भक्त ही पहचान सके, जो वास्तव में ही संत-महापुरुषों के दिव्य सानिध्य को



प्राप्त करने के लिए महाकुंभ में पधारे थे। कोई त्रिवेणी में स्नान कर ही आ गया, कोई किसी कथा-कीर्तन में शामिल होकर आ गया, कोई अपनी ओर से कुछ न कुछ दान-पुण्य कर आ गया, कोई अपनी ओर से भण्डारे चलाता रहा, कोई कल्पवासी बन कर रहा और कोई सभी की सेवा में लगा रहा। हमारी संस्था द हंस फाउण्डेशन की ओर से भी 14 मोबाइल मेडिकल यूनिट का संचालन किया गया जिसमें डॉक्टर और पैरामेडिकल स्टाफ तथा दवाइयां उपलब्ध रहीं जो आवश्यकता के अनुसार सम्पूर्ण मेला परिसर में स्थान-स्थान पर अपनी सेवाएं समर्पित करती रहीं। इसके अलावा द हंस फाउण्डेशन के साथ कई संगठनों एवं संस्थाओं ने मिलकर विशाल “नेत्र कुंभ” का आयोजन किया था जिसमें 38 हजार आंखों के ऑपरेशन के साथ लगभग 3 लाख लोगों की आंखों की जांच के साथ चश्मे वितरित किए गए।

माताश्री मंगला जी ने कहा कि भगवान की कृपा से मनुष्य का शरीर मिलता है, किन्तु इसके साथ हमें जिम्मेदारियां भी मिलती हैं। हमें अपनी सांसारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए परमात्मा की भक्ति करते रहना चाहिए और धीरे-धीरे अवस्था के अनुसार वैराग्य और संन्यास की ओर बढ़ना चाहिए। यह नहीं कि हम अपनी जिम्मेदारियां को छोड़कर भाग जाएं और संन्यासी बन जाएं तो न हम यहां सफल रहें और न संन्यास धर्म का निर्वाह कर पाएं। आज कलिकाल का ऐसा प्रभाव हो गया है कि भाई-भाई के बीच विवाद, पिता और पुत्र के बीच विवाद। परस्पर इतना लोभ और लालच बढ़ गया है कि किसी को किसी की परवाह नहीं है। लोग धन के लिए अपनी बेटियों तक को बेच

देते हैं। संतानें अपने मन की चलाती हैं, इसलिए दुखी हैं। संतानें अपने माता-पिता की इज्जत नहीं करतीं। परिवार और समाज में बुराइयां बढ़ती जा रही हैं, जो सभी मनुष्यों को प्रभावित कर रही हैं, इन बुराइयों से बचने का एकमात्र उपाय अध्यात्म को धारण करना ही है। यदि जीवन में अध्यात्म को नहीं अपनाया तो सांसारिक बुराइयों से हमारी कोई सुरक्षा नहीं कर सकता।

माताश्री मंगला जी ने कहा कि सत्संग में सभी को आना चाहिए। मुख्य रूप से बच्चों को तो सत्संग में अवश्य ही लाना चाहिए। सत्संग से ही उन्हें सद्मार्ग की शिक्षा और संस्कार मिलेंगे। अन्यथा बच्चे भटक जाएंगे। बच्चों को सही मार्ग पर लाने के लिए माता-पिता को अपनी क्रियाओं को सही रखना होगा। घर में जब माता-पिता सुबह समय से उठकर भगवान का भजन करेंगे, आरती-पूजा करेंगे, घर में जब पूजा की घंटी बजेगी, शंख बजेगा तो बच्चों में वही संस्कार आएंगे। उन्होंने कहा कि सांसारिक क्रियाएं मनुष्य और पशु में एक समान हैं, केवल धर्म के आचरण से मनुष्य-मनुष्य बनता है। जैसे स्वर्ण अग्नि में तपकर चमकता है, वैसे ही मनुष्य का जीवन भी त्याग और तपस्या से ही चमकता है। जैसे प्रशिक्षण देकर पुलिस के सिपाही और सैनिक को देश व सामाजिक सुरक्षा के लिए तैयार किया जाता है, वैसे ही मनुष्य को सत्संग के माध्यम से प्रशिक्षण देकर अध्यात्म की साधना के लिए तैयार किया जाता है। साधना में परिपक्व साधक ही अध्यात्म में सफल होता है। ऐसा परिपक्व साधक ही माया के झंझटों से अपनी सुरक्षा कर पाता है। उन्होंने कहा कि भक्ति मार्ग में सबसे बड़ा है प्रभु के नाम का सुमिरण।

जब प्रभु को याद करते रहेंगे तो हमारे भीतर का तार प्रभु से जुड़ा रहेगा।

माताश्री मंगला जी ने कहा कि सत्संग ऐसा प्रसाद है जो अन्दर के अज्ञान अंधकार को दूर कर देता है और ज्ञान के प्रकाश से हृदय को प्रकाशित कर देता है। सत्संग में ही हमें ज्ञान के मोती मिलते हैं। श्री माता जी ने कहा कि जिनके बच्चे आध्यात्मिक होते हैं, उनके माता-पिता का अंत भी अच्छा होता है। वे उन्हें माया-मोह में नहीं डालते बल्कि अंत समय में उन्हें प्रभु नाम सुमिरण के लिए प्रेरित करते हैं ताकि उनकी आत्मा का भला हो। आध्यात्मिक बच्चे माता-पिता की दौलत का लालच नहीं करते। बल्कि संसारी बच्चों की नजर अपने माता-पिता की धन-दौलत पर ही होती है। उन्होंने कहा कि जो शिष्य गुरु महाराज के प्रति समर्पित होता है, उनका बनकर रहता है, उसे समाज में सम्मान मिलता है, गुरु महाराज जी की सेवा का अवसर मिलता है। जो मन के मुताबिक चलता है, वह सेवा और सम्मान दोनों से वंचित हो जाता है। उन्होंने कहा कि जैसे मां-बाप अपने सभी बच्चों को समान रूप से पालते-पोषते हैं, वैसे ही गुरु महाराज जी भी सभी शिष्यों और भक्तों के प्रति समान भाव रखते हैं, वे सभी का भला चाहते हैं, वे सभी को सुखी और आनंद में देखना चाहते हैं। गुरु महाराज जी की कृपा सभी पर समान रूप से बरस रही है। इस तरह लगातार एक घंटा तक श्री माता जी भगवत भक्तों को सम्बोधित करते रहे। तत्पश्चात सभी को माताजी-महाराज जी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस प्रकार बहुत ही आनंदपूर्ण वातावरण में महाशिवरात्रि का महापर्व संपन्न हुआ। तत्पश्चात विशाल भण्डारे का भी आयोजन हुआ। ■

# परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी की जयंती 'मातृ शक्ति दिवस' के सुअवसर पर विशाल जनकल्याण समारोह

आप सभी प्रेमी भक्तों को अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी जी की जयन्ती "मातृ शक्ति दिवस" के सुअवसर पर 'विशाल जनकल्याण समारोह' 5 व 6 अप्रैल, 2025 (शनिवार एवं रविवार) को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। इस समारोह के मुख्य अतिथि एवं वक्ता परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी होंगे। इसके अलवा अनेक विद्वानों, बुद्धिजीवियों, समाज सुधारकों तथा महात्मागण के उद्बोधन के साथ प्रसिद्ध संगीतकारों एवं गायकों द्वारा भजन-संगीत तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की जाएगी। इस सुअवसर पर जिज्ञासुओं को आत्मज्ञान का व्यावहारिक बोध भी कराया जाएगा।



अतः आप अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक प्रेमी भक्तों, जिज्ञासुओं एवं श्रद्धालुओं के साथ सपरिवार पधारकर 'जनकल्याण समारोह' में भाग लेकर आत्म लाभ अवश्य प्राप्त करें।

कार्यक्रम निम्नानुसार है-

5 अप्रैल को सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक प्रवचन एवं भजन-संगीत

6 अप्रैल को सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक प्रवचन एवं भजन-संगीत

स्थान- श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड,

भाटी, छतरपुर, नई दिल्ली-110074

निवेदक- हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर), नई दिल्ली

संपर्क-8800291788, 8800291288

इस जनकल्याण समारोह का सीधा प्रसारण हंसलोक T.V.  
पर दोनों दिन सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक किया जायेगा।



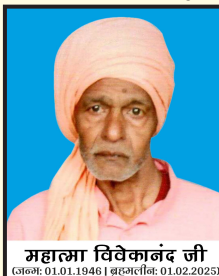
[www.youtube.com/@hanslokTV](http://www.youtube.com/@hanslokTV)



<https://www.facebook.com/Hanslok>

## -: श्रद्धांजलि :-

बड़े दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि महात्मा विवेकानंद जी पिछला नाम श्री अर्जुन चौधरी पुत्र स्वर्गीय श्री सहदेव चौधरी निवासी ग्राम- हंसडीहा जिला दुमका झारखंड दिनांक 1 फरवरी, 2025 की रात्रिकाल ब्रह्मलीन हो गये। महात्मा जी की उम्र 79 वर्ष थी। महात्मा जी ने लगभग 40 वर्ष पूर्व जगतजननी माताश्री राजेश्वरी देवी की शरणागति ग्रहण की थी, तभी से वे लगातार विभिन्न आश्रमों में सेवा कार्यों में संलग्न रहे। लगभग 12 वर्ष पूर्व परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं परमाराध्या माताश्री मंगला जी ने उन्हें संन्यास दीक्षा देकर अध्यात्म ज्ञान प्रचार-प्रसार का सेवा कार्य सौंपा, जिसे वे पूर्ण लगन और मेहनत के साथ करते रहे। उन्होंने बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखण्ड और मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में अध्यात्म ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। महात्मा जी का रहन-सहन बहुत साधारण था, वे हमेशा एक फकीर की तरह रहते थे, न किसी से लगाव न किसी से अलगाव। वे पूर्ण बेबाकी से सत्संग में अपनी बात रखते थे, जो बहुत ही प्रभावशाली होती थी। प्रचार-प्रसार के सेवा कार्य में उन्होंने कभी अपने स्वास्थ्य को आड़े नहीं आने दिया; और यही कारण था कि जब तक वे चलने-फिरने और बोलने में समर्थ रहे अध्यात्म ज्ञान के प्रचार-प्रसार में अपनी सेवाएं देते रहे। अस्वस्थता के कारण चलने-फिरने में असमर्थ होने के कारण वे श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली में ही स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे थे। महात्मा जी के द्वारा गुरु दरबार में की गयीं सेवाएं हम सबके लिए प्रेरणास्पद हैं, जो सदैव अनुकरणीय रहेंगी। हम सभी संस्था के सदस्य परमपिता परमात्मा और श्री सद्गुरुदेव महाराज जी से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें। हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि! ओम शांति! ओम शांति!! ओम शांति!!!



महात्मा विवेकानंद जी  
(जन्म: 01.01.1946 | वृद्धावस्था: 01.02.2025)

- हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर, नई दिल्ली

## श्री हंसलोक सेवक सूचना

सभी श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं तथा जूनियर सेवकों को सूचित किया जाता है कि माताश्री राजेश्वरी देवी जी की जयन्ती "मातृ शक्ति दिवस" के सुअवसर पर 'जनकल्याण समारोह' 5 व 6 अप्रैल, 2025 (शनिवार एवं रविवार) को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर हम सभी को परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के दर्शन, प्रवचन एवं सेवा का सौभाग्य प्राप्त होगा।

इस जनकल्याण समारोह के अवसर पर श्री हंसलोक सेवक व सेविकाओं का 4 से 7 अप्रैल, 2025 तक "सेवा शिविर" लगाया जा रहा है जिसमें सभी सेवक/सेविकाएं समारोह की व्यवस्था से संबंधित विभिन्न कार्यों में सेवा-सहयोग करेंगे। इस अवसर पर 4 अप्रैल, 2025 को अपराह्न 2:30 बजे से श्री हंसलोक सेवकों की एक बैठक रखी गयी है जिसमें सभी सेवक/सेविकाओं का भाग लेना आवश्यक है। अतः सभी दस्तानायक अपने सहयोगी सेवक/सेविकाओं के साथ 3 अप्रैल की शाम अथवा 4 अप्रैल की सुबह तक श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली अवश्य पहुँच जायें और अपनी सेवा संभाल लें।

निवेदक

प्रभारी- श्री हंसलोक सेवक संगठन





विशाल सत्संग समारोह - नेपाल, 22 मार्च, 2025



पशुपतिनाथ मंदिर - नेपाल



हेटौंडा, नेपाल - नवनिर्मित आश्रम

**हेटौंडा, नेपाल।** श्री हंसलोक जनकल्याण समिति, नेपाल के तत्वावधान में परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी की प्रेरणा एवं प्रयास से हेटौंडा में 21 मार्च, 2025 को **नवनिर्मित आश्रम भवन का उद्घाटन** परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी के कर कमलों के द्वारा हुआ। इस अवसर पर समिति के सभी पदाधिकारीगण, प्रेमीभक्त एवं कार्यकर्तागण उपस्थित थे। **22 मार्च, 2025** को **हेटौंडा के टी. सी. एन. मैदान** में **विशाल सत्संग समारोह** का आयोजन किया गया जिसमें हजारों प्रेमीभक्तों ने भाग लिया। 24 मार्च, 2025 को **काठमाडौं** में भी परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी के कर कमलों के द्वारा **सीता पाइला** में **नवनिर्मित सत्संग भवन** का भव्य उद्घाटन हुआ। इस विशाल सत्संग समारोह से नेपाल राज्य के प्रेमीभक्तों में नवस्फूर्ति एवं ऊर्जा का संचार हुआ।

## रामनवमी पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं!

चैत्र मास शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को भगवान श्री राम का प्रादुर्भाव हुआ। वे श्रेष्ठ राजा थे, उन्होंने सत्य, दया, करुणा, सदाचार और धर्म के मार्ग पर चलते हुए राज किया, इस कारण उन्हें आदर्श पुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। श्री राम धैर्य की पराकाष्ठा थे। वे आदर्श भाई, मित्र, दयालु, दृढ़ प्रतिज्ञ, सदाचारी और कुशल जननेता थे, उनका जीवन हम सभी के लिए एक आदर्श है। कर्तव्यनिष्ठ और संयमी बनकर समाज में आदर्श स्थापित करना चाहिए, यही रामनवमी मनाने का मुख्य उद्देश्य है। सभी को रामनवमी की बहुत-बहुत बधाई! - **परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी**



आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।



MOB: 8800291788/ 8800291288



/hanslok